श्री बाहुबली भगवान,श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 16	अंक : 1	मुम्बई, अप्रैल 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : ₹ 25	हिन्दी
VOLUME : 16	ISSUE : 1	MUMBAI, APRIL 2026	PAGES : 32	PRICE : ₹ 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

तीर्थंकर श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान, सारनाथ, जिला वाराणसी, उत्तर प्रदेश

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 16 अंक 1 अप्रैल 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

इस अंक में

जैन ग्रन्थ द्रव्यानुयोगतर्कणा के रचयिता राजा भोजदेव 8

सोच को सुस्त मत होने दें 10

कोनकोण्डला, प्रसिद्ध दिगम्बर जैन आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की जन्म स्थली 13

श्री सम्मेदशिखरजी में निर्मित होने वाले बहुउद्देशीय भवन 14

मथुरा चौरासी में होगा 21-22 अक्टूबर को शतकोत्तर रजत वर्ष महोत्सव का उद्घाटन 17

REVIVING JAINISM: THE WHY AND THE HOW 23

॥ जय जिनेन्द्र ॥

महत्वपूर्ण सूचना

जैन तीर्थ वन्दना के अनेकों पाठकों की भावनाओं एवं अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए इसके प्रकाशन की अवधि अप्रैल 2026 से बढ़ाकर जून 2026 कर दी गई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनेक सदस्यों के वर्तमान पते में परिवर्तन होने अथवा उनकी सही जानकारी उपलब्ध न होने के कारण भेजी गई पत्रिकाएँ वापस आ रही हैं या पोस्ट किए जाने के बाद भी संबंधित सदस्यों को प्राप्त नहीं हो पा रही हैं।

अतः सभी पाठकों एवं सदस्यों से पुनः विनम्र अनुरोध है कि 10 मई 2026 तक अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नंबर तथा पहचान संबंधी जानकारी (आधार कार्ड / पैन कार्ड / वोटर आईडी नंबर) हमें उपलब्ध कराने की कृपा करें।

आपकी अद्यतन जानकारी प्राप्त होने पर जुलाई 2026 से पत्रिका डिजिटल माध्यम से आपको नियमित रूप से उपलब्ध कराई जा सकेगी, अन्यथा सही जानकारी के अभाव में आप पत्रिका प्राप्त करने से वंचित रह सकते हैं।

— भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

विद्वत् सम्मेलन आज की आवश्यकता

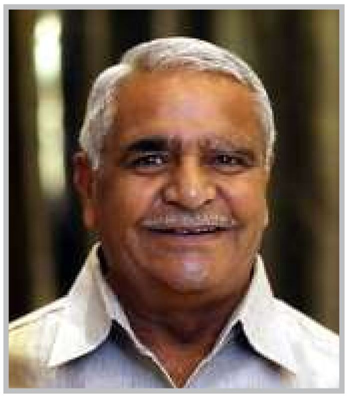

जिस प्रकार त्रेतायुग में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के समकालीन भगवान राम का पदार्पण हुआ था। द्वापर युग में भगवान नेमिनाथ के काल में भगवान कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था उसी प्रकार कलियुग में शाश्वत तीर्थ अयोध्या के पुनरुद्धार एवं विकास कार्य को अपना आशीर्वाद प्रदान करने हेतु गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी पधारी। आप साक्षात सरस्वती स्वरूपा हैं आपने 500 से अधिक ग्रन्थों का सृजन किया हैं। आपकी प्रेरणा से तीर्थंकर जन्म भूमियों का आश्चर्यजनक विकास हुआ है। 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, 4 तीर्थंकरों की जन्मभूमि वाराणसी, (सारनाथ एवं चन्द्रपुरी सहित) 3 तीर्थकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर के अलावा 11 अन्य स्थानों की रज तीर्थंकरों के जन्म से पवित्र हैं। आपकी प्रेरणा से अब लोग जन्मभूमियों की रज को मस्तक पर लगाने हेतु जाने लगे हैं।

विद्वान ही हमारे तीर्थों के इतिहास को उजागर करने एवं उनसे जन-जन को परिचित कराने में सक्षम हैं। मैं इसी अप्रैल - 26 में ही तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ द्वारा अयोध्या में आयोजित विद्वत सम्मेलन में गया था वहॉं विद्वानों की विशाल संगीति एवं सम्मेलन की भव्यता देखकर मन में आह्लाद हुआ। वहॉं 3 विद्वानों का उनके शोधकार्यों हेतु सम्मान भी किया गया। यह स्वस्थ परम्परा है इससे प्रोत्साहन मिलता है।

अगले दिन अ. भा. दि. जैन युवा परिषद के अधिवेशन में भी अनेक समर्पित युवाओं से मिलने का अवसर मिला। शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष में तीर्थ क्षेत्र कमेटी विद्वानों, युवाओं एवं महिलाओं को साथ लेकर अनेक कार्यक्रम बना रही है। जिसकी सूचना यथा समय आपको मिलेगी।

तीर्थों की रक्षा हेतु तीर्थों के इतिहास एवं पुरातत्त्व का संरक्षण एवं विश्लेषण जरूरी है। जो विद्वानों के सहयोग से ही शक्य है। अतः विद्वत् सम्मेलन आज की आवश्यकता है। हम इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु सजग हैं।

भारत के दि. जैन तीर्थ शीर्षक विशाल बहुखण्डीय ग्रंथ भी विद्वानों के सहयोग से ही निकालने की योजना है। सामग्री के संकलन में प्रत्येक जैन विद्वान का सहयोग अपेक्षित है।

हम इस क्षेत्र में प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर के साथ कार्यरत हैं।

अन्त में मैं पुनः आग्रह करूंगा कि जनगणना के कार्य हेतु सजग रहें एवं धर्म के कालम में केवल जैन लिखायें।

सहयोग की आशा में।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन समाज की स्वतंत्र पहचान के बारे में स्पष्ट और दृढ़ भूमिका

जैन समाज भारत का अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और दर्शनशास्त्र से परिपूर्ण एक स्वतंत्र धर्म है। हजारों वर्षों की परंपरा वाले जैन धर्म ने मानवता को अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह, सत्य, "जियो और जीने दो" तथा आत्मसंयम जैसे उच्च मूल्यों का अनमोल योगदान दिया है। आज के आधुनिक और प्रतिस्पर्धी युग में भी ये सिद्धांत उतने ही उपयोगी और मार्गदर्शक हैं।

हाल ही में कुछ स्थानों पर यह कहा जा रहा है कि "जैन समाज हिंदू धर्म का ही भाग है, इसलिए उसे अल्पसंख्यक का दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए।" यह विचार ऐतिहासिक, धार्मिक और संवैधानिक दृष्टि से अनुचित और दिशाभ्रम पैदा करने वाला है। जैन धर्म की अपनी स्वतंत्र तत्त्वज्ञान प्रणाली, आगम ग्रंथ, तीर्थंकर परंपरा और आचार संहिता है, जो उसे एक स्वतंत्र धर्म के रूप में स्पष्ट पहचान देती है।

भारत सरकार ने 2014 में जैन समाज को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय का आधिकारिक दर्जा दिया है। यह निर्णय जैन धर्म की स्वतंत्र पहचान और उसकी मौलिक परंपरा का सम्मान करता है। इसलिए इस निर्णय पर प्रश्नचिह्न उठाना उचित नहीं है।

जैन समाज, हिंदू समाज के साथ सांस्कृतिक दृष्टि से निकट संबंध रखता है, लेकिन उसकी धार्मिक पहचान, तत्त्वज्ञान और आचार संहिता स्वतंत्र हैं। इसलिए दोनों को एक समान मानना या भ्रम उत्पन्न करना टाला जाना चाहिए।

हम सभी को आपसी सम्मान, समझदारी और एकता बनाए रखते हुए देश की विविधता का आदर करना चाहिए।

जैन समाज की स्वतंत्र पहचान का सम्मान करना केवल एक समाज का विषय नहीं है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता की रक्षा करने की जिम्मेदारी भी है।

संतुलन, सहअस्तित्व और पारस्परिक सम्मान ही हमारे राष्ट्र की प्रगति का सच्चा मार्ग है।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

आनुषांगिक प्रभावों पर नियंत्रण बहुत जरूरी

माननीय सर्वोच्च न्यायालय की स्पष्ट व्यवस्थाओं के बाद भी 1970 -72 तक अनेक लोगों की यह मान्यता बनी रही कि जैन धर्म हिन्दू धर्म की एक शाखा है। आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी एवं राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज ने भगवान महावीर 2500 वॉ निर्वाण महामहोत्सव पर जैनधर्म का खुब प्रचार किया किन्तु तब केवल भगवान महावीर का ही प्रचार हो पाया नतीजा यह निकला कि लोग यह मानने लगे कि जैन धर्म के संस्थापक भगवान महावीर है। यह अनुषांगिक प्रभाव (Side effect) रहा। इसके अलावा कतिपय व्यक्तियों के योजनाबद्ध, सुनियोजित प्रचार अभियान के कारण लोग मूल दिगम्बर परम्परा को भूलने लगे तब आचार्य श्री विद्यानन्द जी एवं भट्टारक चारूकीर्ति महास्वामी जी श्रवणबेलगोल ने भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली मूर्ति प्रतिष्ठापना महोत्सव-1981 की घोषणा की इस महोत्सव के निमित्त नग्न दिगम्बर मूर्ति के दर्शन करने से भ्रमित हो रहे लोगों को मूल दिगम्बर परम्परा का बोध हुआ।

1987 - 1988 में आचार्य कुन्दकुन्द द्वितीय सहस्राब्दि महोत्सव मनाया। इन्दौर में काका सा. **श्री देवकुमारसिंह जी कासलीवाल** द्वारा इंदौर में **कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ** की स्थापना की गई। शुरूआत **अर्हत् वचन** शोध पत्रिका निकालने से की। प्रवेशांक का विमोचन तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने सितम्बर 1988 में किया। इसका नवीनतम अंक जुलाई - दिसम्बर 2025 (वर्ष-37, अंक 3 - 4) प्रकाशित हो चुका है। जनवरी - जून 26 मुद्रणाधीन है। यह द्विसहस्राब्दि महोत्सव वर्ष की उपलब्धि है।

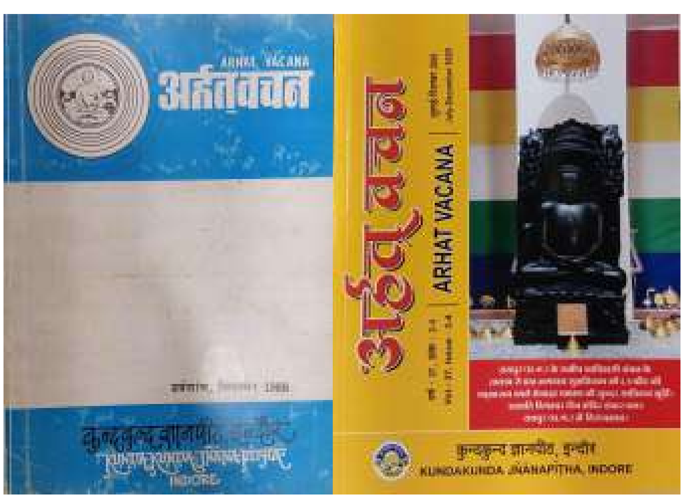

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माता जी ने जैन धर्म की प्राचीनता स्थापित करने हेतु 1992 में अयोध्या विहार किया तब से प्रारम्भ कर सतत भगवान ऋषभदेव का प्रचार कर रही हैं। भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन का आयोजन, तीर्थंकर ऋषभदेव दि. जैन विद्वत् महासंघ की स्थापना दिल्ली में, ऋषभदेव मेला का आयोजन, भगवान ऋषभदेव की विश्व की सबसे बडी मूर्ति 108 फीट की मूर्ति का निर्माण मांगी तुंगी में एवं प्रतिष्ठा (2016) तथा अनेकों संगोष्ठी/सेमिनारों का आयोजन किया गया। किन्तु वर्तमान में एक नई विसंगति सामने आ रही है।

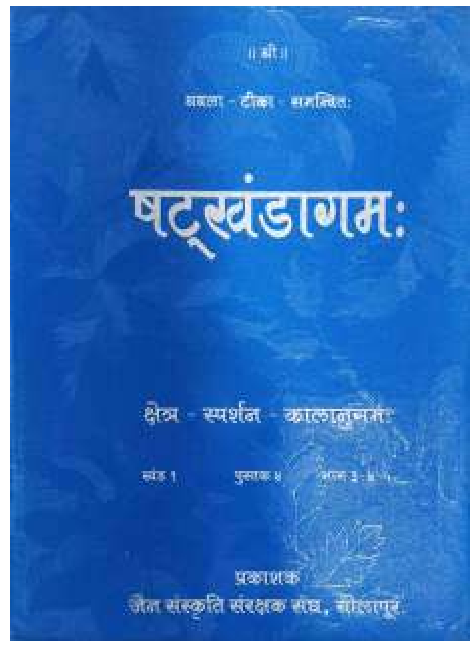

श्वेताम्बर आगमों का संकलन तो 456 ई. में देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण जी की अध्यक्षता में स्मृति के आधार पर त्रुटित, स्खलित सामग्री के सहयोग से किया गया था। जबकि दि. परम्परा के आचार्य धरसेन - पुष्पदंत, भूतबलि (1 श. ई.), आ. कुन्दकुन्द (1 श. ई.), आ. गुणधर (1 श. ई), आ. उमास्वामी (2सरी श. ई.), आ. यतिवृषभ (1 श. ई.), आदि महत्त्वपूर्ण आचार्य दूसरी शताब्दी तक के हैं।

हमारे ही श्वेताम्बर बन्धु श्वेताम्बर परम्परा मान्य ग्रन्थों 11 अंग एवं 12 उपांग को तो जैन आगम मानते है। किन्तु दिगम्बर जैन आगमों को आचार्य प्रणीत ग्रन्थों को केवल परिवर्ती आचार्यों की कृति बता देते है। यह तथ्य सत्य से परे है। षट्खंडागम (षट्खंड आगम) के तो नाम में ही आगम है। फलतः माताजी ने षट्खंडागम

ग्रंथ के विशेष प्रचार-प्रसार हेतु षट्खंडागम द्विसहस्राब्दि महोत्सव वर्ष (2026-2027) घोषित किया है।

षट्खंडागम द्विसहस्राब्दि महोत्सव वर्षः -

विशाल जैन आगम साहित्य का मूल स्रोत द्वादशांग जिनवाणी है। चौबीसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से निःसृत ज्ञान के आधार पर इन्द्रभूति गौतम गणधर ने 12 अंग एवं 14 पूर्वों की रचना की। (तिलोयपण्णत्ती, 1/77-81)। यह ज्ञान केवली, श्रुतकेवली, दसपूर्व धारी, एकादशांग धारी, दशांगधारी आचार्यों के बाद 9, 8 आदि अंगों के धारी आचार्यों के माध्यम से आचार्य धरसेन तक चला आया। आचार्य श्री धरसेन स्वामी केवल एक अंग के ज्ञाता थे। न्यूनाधिक परिवर्तनों सहित इतिहासज्ञ पट्टावलियों के आधार पर आचार्य श्री धरसेन जी का काल ईसा की प्रथम शताब्दी निर्धारित करते हैं। आपने **अग्रायणीय** नामक द्वितीय पूर्व के एक अंश से निकले जिनागम का ज्ञान अपने शिष्यों पुष्पदन्त एवं भूतबलि को किया जिसे उन्होंने 6 खण्डों में विभाजित करके षट्खंडागम नामक ग्रंथ में लिपिबद्ध किया।

वर्तमान में 5 खण्ड जिनमें 6841 सूत्र है ही षट्खंडागम के नाम से प्रचलन में है एवं यह आचार्य वीरसेन कृत धवला टीका सहित 16 पुस्तकों में प्रकाशित है। आ. भूतबलि द्वारा सृजित महाबंध जो स्वयं 30000 सूत्र प्रमाण है। महाधवल के नाम से 7 खण्डों में अलग से प्रकाशित है।

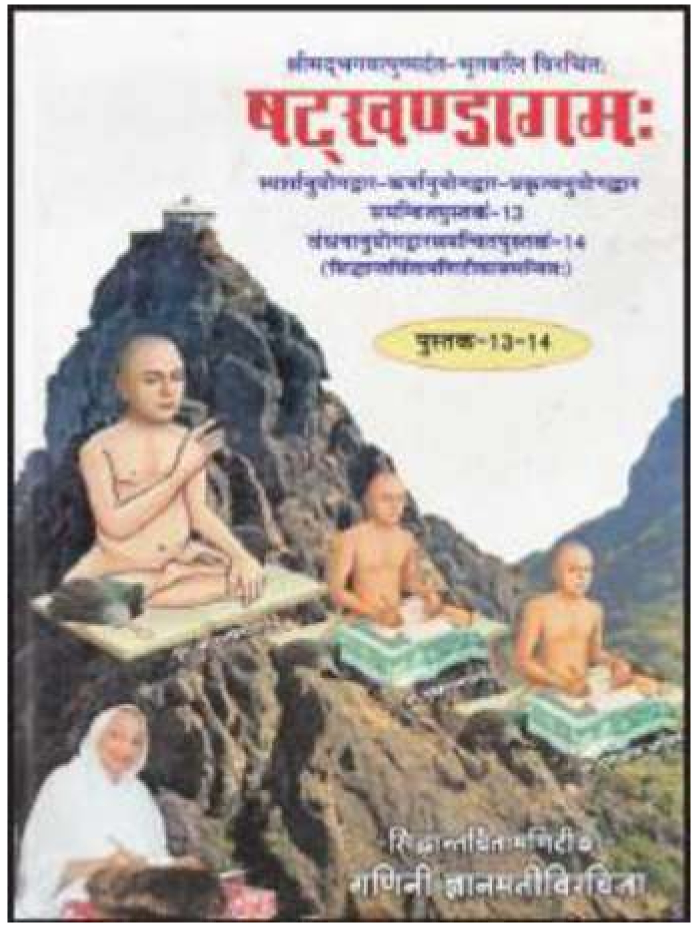

षट्खंडागम ग्रंथराज पर अब तक 7 टीकाऐं लिखी गई हैं।

1. आचार्य कुन्दकुन्द कृत परिकर्म टीका: उल्लेखानुसार षट्खंडागम प्रथम तीन खण्डों पर लिखी यह टीका 12000 श्लोकप्रमाण थी। यह गणितमय थी। इसके लेखक आ. कुन्दकुन्द कौन से कुन्दकुन्द थे? यह तय नहीं। किन्तु इसके उद्धरण **परियम्म सुत्तं** के नाम से धवला टीका में प्रचुरता से मिलते है एवं यह ग्रंथ गणित का प्रामाणिक ग्रंथ था।

2. **श्री शामकुंडाचार्य** द्वारा रचित **पद्धति टीका**। यह भी 12000 श्लोक प्रमाण थी एवं संस्कृत, प्राकृत और कन्नड़ मिश्रित भाषा में थी।

3. **श्री तुंबुलूर आचार्य** द्वारा रचित **चूडामणि टीका**। यह षट्खंडागम के प्रथम पॉच खण्डों तथा कषायप्रामृत को मिलाकर 84000 श्लोक प्रमाण थी।

4. **आचार्य समंतभद्र स्वामी** ने संस्कृत भाषा में प्रथम 5 खण्डों में 48000 **श्लोक प्रमाण टीका** लिखी।

5. **श्री बप्पदेव सूरि** ने **व्याख्याप्रज्ञप्ति** नामक टीका प्रथम पॉचखण्ड़ एवं कषाय प्रामृत पर लिखी। यह 60000 श्लोक प्रमाण थी।

6. **आचार्य वीरसेन स्वामी** ने प्रथम पॉच खण्डों पर 72000 श्लोक प्रमाण **धवला टीका** प्राकृत भाषा में लिखी। यह विषालतम टीका ग्रंथ है।

7. **गणिनी ज्ञानमती माता जी** ने सिद्धान्तचिन्तामणि टीका संस्कृत भाषा में 08.10.1995 से 04.04.2007 के मध्य लिखी। आपने इस संस्कृत टीका का सृजन 3107 पृष्ठों में किया कुल 11.5 वर्ष लगे। इसका हिन्दी अनुवाद (प्रथम 13 पुस्तकों का) प्रज्ञाश्रमणी **आर्यिका श्री चन्दनामती माता जी** ने किया है। यह टीका भी संस्कृत टीका के साथ में प्रकाशित है। इसका नाम ज्ञानचिन्तामणि टीका विद्वानों ने सुझाया है। बाद की 3 पुस्तकों की हिन्दीं टीका होना अभी शेष है।

इस प्रकार हम देखते है कि आचार्य कुन्दकुन्द जैसे समर्थ गणितज्ञ आचार्य द्वारा टीका लिखने के बाद भी निरन्तर आचार्यों द्वारा पद्धति, चूडामणि, व्याख्याप्रज्ञप्ति, धवला आदि टीकाओं का सृजन किया जाता रहा। प्रथम पॉच खण्डों के 6841 सूत्रों का विषय ही इतना जटिल है कि सतत् टीकाओं के लिखने के बाद भी स्पष्ट नहीं हो पाया। तभी तो धवला टीका जो प्राकृत भाषा निबद्ध विशालतम ग्रंथ है के बाद भी **आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती** को शिष्य चामुण्डराय के शिक्षण हेतु **गोम्मटसार** की (जीवकाण्ड 734 गाथा, कर्मकाण्ड 972 गाथा) की रचना करनी पड़ी वे षट्खंडागम के पारगामी विद्वान थे।

गोम्मटसार कर्मकाण्ड, भाग - 1 (347) में लिखा है: -

जह चक्केण य चक्की छक्खडं साहित्यं अविग्घेण।
तह भइचक्केण मया छक्खंडं साहियं सम्मं।। 397

अर्थात् जिस प्रकार चक्रवर्ती अपने चक्ररत्न के द्वारा षट्खण्ड भरत क्षेत्र को बिना किसी विघ्न बाधा के साधित करता है वश में करता है उसी प्रकार मैंने भी अपने बुद्धिरूपी चक्र के द्वारा छह खण्डों से युक्त परमागम को अच्छी तरह साधित किया है। अर्थात् अध्ययन किया है।

इसके बाद भी केशववर्णी को **कर्नाटक वृत्ति** लिखनी पड़ी। इस पर भट्टारक नेमिचन्द्र ज्ञानभूषण ने **जीव तत्त्वप्रदीपिका** टीका लिखी जिसके आधार पर ही पं. टोडरमल में **सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका टीका** लिखी। स्वयं गोम्मटसार जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड पर खुब लिखा गया है।

वास्तव में सिद्धान्त ग्रंथों का विषय ही इतना जटिल होता है कि सतत् साधना करने के बाद भी ग्रंथ का हार्द्र प्रकट नहीं हो पाता इसीलिए माता जी ने सिद्धान्तचिन्तामणि टीका का सृजन किया।

गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी ज्ञान का अक्षय भंडार हैं, सरस्वती स्वरूपा है किन्तु विनम्रता भी कूट-कूट कर भरी है। सिद्धान्तचिन्तामणि टीका के सृजन का उद्देष्य स्पष्ट करते हुए आप लिखती है। (भाग-1, पृ.-20)

षट्खंडागम सूत्र ग्रंथ एवं उसकी टीका का स्वाध्याय मैंने कई बार किया उसमें बहुत से ऐसे सैद्धान्तिक और गणित के प्रकरण है जो अतीव क्लिष्ट है उन विषयों में मेरी भी प्रगति नहीं है। इसी हेतु से कई बार मन में आया कि इस महान सूत्र ग्रंथ की धवला टीका के जो सरल अंश है उन्हें उद्धृत करके अल्पज्ञानी साधु -साध्वियों व प्रबुद्ध पाठकों के लिए भी षट्खंडागम का ज्ञान कराया जाये तथा अपने क्षयोपशम के ज्ञान को भी वृद्धिंगत किया जाये।

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माता जी ने जब स्वयं लिख दिया कि (धवला टीका) में बहुत से ऐसे सैद्धान्तिक और गणित के प्रकरण है जो अतीव क्लिष्ट हैं। तो गणितज्ञों को भी सोचना चाहिए।

विद्वानों को तो अब गणित के विशेषज्ञों/पूज्य संतों यथा उच्चारणाचार्य विनम्रसागर जी, आचार्य सुयशसागर जी, निर्यापक श्रमण विज्ञसागर जी, गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, प्रज्ञाश्रमणी आ. चन्दनामती माताजी, आ. शुद्धोऽहं श्री माताजी के चरण सान्निध्य में बैठकर इस क्लिष्टता को दूर करना चाहिए। इससे ग्रंथ का हार्द्र प्रकट होगा। विषय का पल्लवन होगा। कर्म ग्रंथों में निहित गणित के अधिक प्रकाश में आने से जैन गणित का गौरव बढ़ेगा एवं शोधकों की आत्मा का कल्याण भी होगा।

षट्खंडागम द्विसहस्राब्दि महोत्सव वर्ष में इसके गणितीय पक्ष को उद्घाटित करना हम सबका कर्तव्य है। इससे दिगम्बरत्व का गौरव बढ़ेगा। सत्य की स्थापना होगी। हम इस वर्ष 4 -6 संगोष्ठियॉ, कार्यशालाऐं करें, तब बात बनेगी।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

जैन ग्रन्थ द्रव्यानुयोगतर्कणा के रचयिता राजा भोजदेव

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

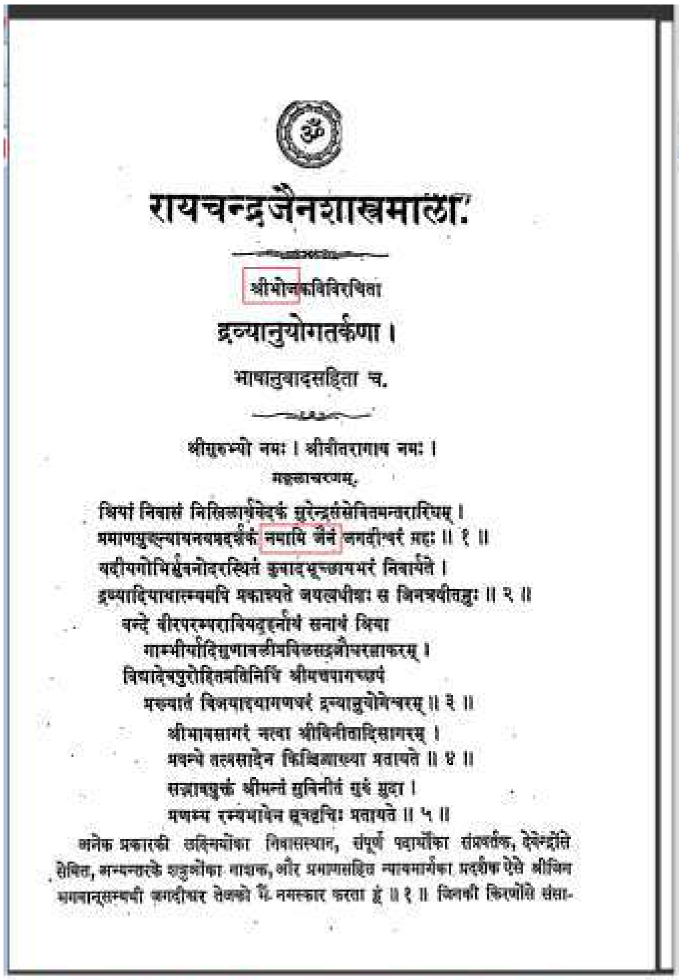
रायचन्द्रजैनशास्त्रमाला.

श्रीभोजकविविरचिता

द्रव्यानुयोगतर्कणा।

भाषानुवादसहिता च.

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीवीतरागाय नमः।

मङ्गलाचरणम्.

श्रियां निवासं निखिलार्थवेदकं सुरेन्द्रसंसेवितमन्तरारिघम्।
प्रमाणयुङ्न्यायनयप्रदर्शकं नमामि जैनं जगदीश्वरं महः॥ १॥
यदीयगोभिर्भुवनोदरस्थितं कुवादभून्छायभरं निवार्यते।
द्रव्यादियाथात्म्यमपि प्रकाश्यते जयत्वधीशः स जिनत्रयीतनुः॥ २॥
वन्दे वीरपरम्परायितगुरुं सनाथं श्रिया
गाम्भीर्यादिगुणावलीमविकलस्फ्रौचरत्नाकरम्।
विद्यादेवपुरोहितमतिनिधिं श्रीमत्तपागच्छपं
मत्वातं विजयादयागणधरं द्रव्यानुयोगेश्वरम्॥ ३॥
श्रीभावसागरं नत्वा श्रीविनीतादिसागरम्।
प्रबन्धे तत्प्रसादेन किञ्चिद्व्याख्या प्रतायते॥ ४॥
सद्भावयुक्तं श्रीमन्तं सुविनीतं गुरुं मुदा।
प्रणम्य रम्यभावेन सूत्ररुचिः प्रतायते॥ ५॥

अनेक प्रकारकी लक्ष्मियोंका निवासस्थान, संपूर्ण पदार्थोंका संप्रवर्तक, देवेन्द्रोंसे सेवित, अभ्यन्तरके शत्रुओंका नाशक, और प्रमाणसहित न्यायमार्गका प्रदर्शक ऐसे श्रीजिन भगवान्सम्बन्धी जगदीश्वर तेजको मैं नमस्कार करता हूं॥ १॥ जिनकी किरणोंसे संसा-

राजा भोजदेव विरचित द्रव्यानुयोगतर्कणा प्रारम्भिक पेज नं. 1

राजा भोज देव एक अच्छे कवि और बहुत बड़े विद्वान्, प्राकृत-संस्कृत, व्याकरण के मर्मज्ञ थे। वे जैन शासक थे। उन्होंने या उनके मंत्रियों आदि ने कई जिन मूर्तियां बनवाई, ग्रन्थ निर्मित किये। प्राकृत भाषा अधिकतर जैन आगमों में ही प्रयुक्त हुई है। भोजदेव ने अपने शिलालेख प्राकृत भाषा में ही लिखवाये जो भोजशाला में दीवरों पर अभी भी लगे हुए हैं। जैन श्रुत- जिनवाणी-जिन सरस्वती चार अनुयोगों में विभक्त है- 1 प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोग। इनमें से एक अनुयोग पर राजाभोज- कवि ने एक अनुयोग पर संस्कृत पद्य में रचना की है, उसका नाम है- 'द्रव्यानुयोगतर्कणा''। राजा भोज के द्वारा ही लिखा गया इसका प्रथम श्लोक मंगलाचरण इस प्रकार है-

श्रियां निवासं निखिलार्थवेदकं सुरेन्द्रसंसेवितमन्तरारिघम्।
प्रमाणयुङ्न्यायनयप्रदर्शकं नमामि जैनं जगदीश्वरं महः॥1॥ (पेज नं.1)

अर्थात्- अनेक प्रकार की लक्ष्मियों का निवास स्थान, संपूर्ण पदार्थों का

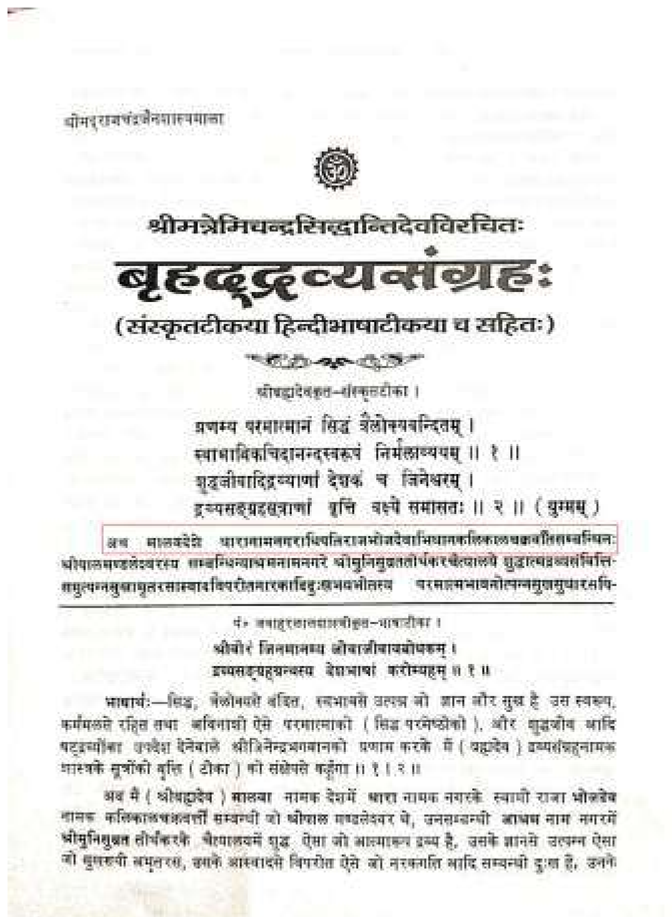
श्रीमद्राजचंद्रजैनशास्त्रमाला

श्रीमन्नेमिचन्द्रसिद्धान्तिदेवविरचितः

बृहद्द्रव्यसंग्रहः

(संस्कृतटीकया हिन्दीभाषाटीकया च सहितः)

श्रीब्रह्मदेवकृत-संस्कृतटीका।

प्रणम्य परमात्मानं सिद्धं त्रैलोक्यवन्दितम्।
स्वाभाविकचिदानन्दस्वरूपं निर्मलाव्ययम्॥ १॥
शुद्धजीवादिद्रव्याणां देशकं च जिनेश्वरम्।
द्रव्यसङ्ग्रहसूत्राणां वृत्तिं वक्ष्ये समासतः॥ २॥ (युग्मम्)

अथ मालवदेशे धारानामनगराधिपतिराजभोजदेवाभिधानकलिकालचक्रवर्तिसम्बन्धिनः श्रीपालमण्डलेश्वरस्य सम्बन्धिन्याश्रमनामनगरे श्रीमुनिसुव्रततीर्थंकरचैत्यालये शुद्धात्मद्रव्यसंवित्ति-समुत्पन्नसुखामृतरसास्वादविपरीतनारकादिदुःखभयभीतस्य परमात्मभावनोत्पन्नसुखसुधारसपि-

पं० जवाहरलालशास्त्रीकृत-भाषाटीका।

श्रीवीरं जिनमानम्य जीवाजीवावबोधकम्।
द्रव्यसङ्ग्रहग्रन्थस्य देशभाषां करोम्यहम्॥ १॥

भावार्थः—सिद्ध, त्रैलोक्यसे वंदित, स्वभावसे उत्पन्न जो ज्ञान और सुख है उस स्वरूप, कर्ममलसे रहित तथा अविनाशी ऐसे परमात्माको (सिद्ध परमेष्ठीको), और शुद्धजीव आदि षट्द्रव्योंका उपदेश देनेवाले श्रीजिनेन्द्रभगवानको प्रणाम करके मैं (ब्रह्मदेव) द्रव्यसंग्रहनामक शास्त्रके सूत्रोंको वृत्ति (टीका) को संक्षेपसे कहूंगा॥ १। २॥

अब मैं (श्रीब्रह्मदेव) मालवा नामक देशमें धारा नामक नगरके स्वामी राजा भोजदेव नामक कलिकालचक्रवर्ती सम्बन्धी जो श्रीपाल मण्डलेश्वर थे, उनसम्बन्धी आश्रम नाम नगरमें श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकरके चैत्यालयमें शुद्ध ऐसा जो आत्मारूप द्रव्य है, उसके ज्ञानसे उत्पन्न ऐसा जो सुखरूपी अमृतरस, उसके आस्वादसे विपरीत ऐसे जो नरकगति आदि सम्बन्धी दुःख है, उनसे

प्राकृत जैन ग्रन्थ द्रव्यसंग्रह की रचना भोज के सम्बन्धि के लिये हुई इसका ग्रन्थ में स्पष्ट उल्लेख प्रथम पृष्ठ

संप्रवर्तक, देवेन्द्रों से सेवित, अभ्यन्तर के शत्रुओं का नाशक और प्रमाण सहित न्यायमार्ग का प्रदर्शक ऐसे श्री जिन भगवान् सम्बंधी जगदीश्वर तेज को मैं नमस्कार करता करता हूं॥1॥

इस मंगलाचरण में श्री जिन जगदीश्वर के तेज को नमस्कार किया गया है।

प्रथमसूत्र में प्रतिज्ञावाक्य है-

श्रीयुगादिजिनं नत्वा कृत्वा श्रीगुरुवन्दनम्।
आत्मोपकृतये कुर्वे द्रव्यानुयोगतर्कणा॥1॥ (पेज नं.2)

अर्थात्- युग के आदि में आविर्भूत भगवान् आदिनाथ-ऋषभदेव जी को नमस्कार करके तथा गुरुदेव को वन्दन करके स्वयं के उपकार के लिए द्रव्यानुयोग तर्कणा नामक ग्रन्थ को मैं रचता हूं।

इसमें आदिजिन को नमस्कार किया है तथा ग्रन्थ रचने का उद्देश्य स्वयं का- अपने आत्मा का उपकार बताया है।

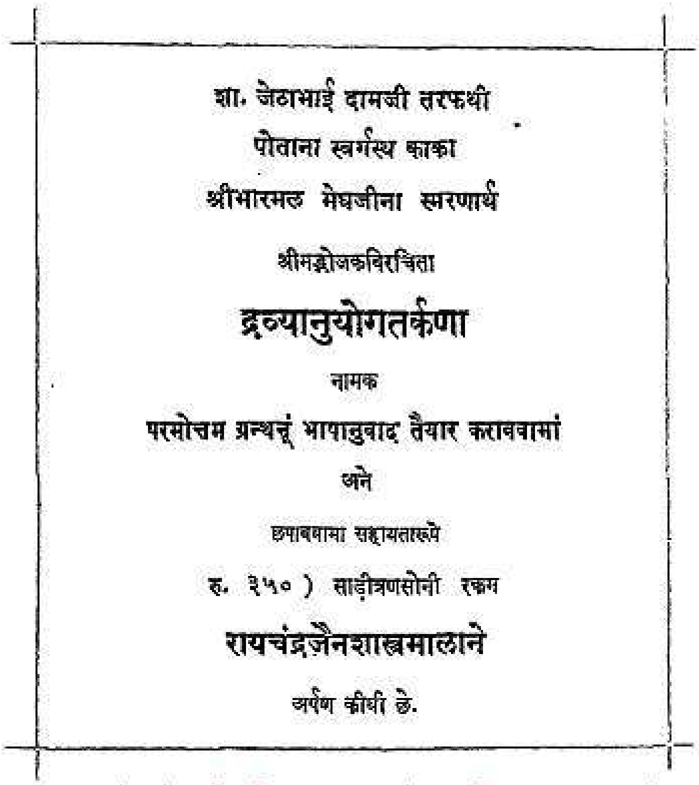

शा. जेठाभाई दामजी तरफथी
पोताना स्वर्गस्थ काका
श्रीभारमल मेघजीना स्मरणार्थ
श्रीमद्भोजकविरचिता
द्रव्यानुयोगतर्कणा
नामक
परमोत्तम ग्रन्थनूं भाषानुवाद तैयार कराववामां
अने
छपाववामां सहायतारूपे
रु. ३५०) साड़ीत्रणसोनी रकम
रायचंद्रजैनशास्त्रमालाने
अर्पण कीधी छे.

राजा भोजदेव विरचित द्रव्यानुयोगतर्कणा का इनर पेज

पन्द्रह अध्यायों में विभक्त इस ग्रन्थ के अन्तिम अध्याय का 23 वां श्लोक है-

तेषां विनेयलेशेन भोजेन रचितोक्तिभिः।
परस्वात्मप्रबोधार्थं द्रव्यानुयोगतर्कणा।।23।।
(पेज नं.240)

अर्थात्- स्वयं और दूसरों को प्रबोध करने के लिए कुछ विनयी भोज ने उक्ति पूर्वक द्रव्यानुयोगतर्कणा ग्रन्थ की रचना की है।

इसमें संस्कृत शलोक हैं, जिन्हें सूत्र कहा है। भोज कवि द्वारा ही इसकी संस्कृत व्याख्या लिखी गई है और हिन्दी भाषा टीका व्याकरणाचार्य पं. ठाकुरप्रसाद द्विवेदी ने लिखी है।

इसे अधिकारों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक अधिकार के अन्त में लिखा है- ''इति द्रव्यानुयोगतर्कणायां कृतिभोजविनिर्मितायामाचार्योपाधि- धारीद्विवेद्युपनामक- पण्डितठाकुरप्रसाद- शास्त्रीप्रणीतभाषाटीकासमलंकृतायो (अध्याय का नाम) प्रथमोऽध्यायः।। (पेज नं. 11)

इसमें भी ''भोजविनिर्मित'' लिखा है।

इसके प्रथम अधिकार में 9 सूत्र या श्लोक हैं, द्वितीय में 16, तृतीय में 15, चतुर्थ में 14 , पंचम में 20, षष्ठ में 17, सप्तम में 16, अष्टम में 27, नवम् में 29, दशवें अध्याय में 21, ग्यारहवें में 27, बारहवें में 18, तेरहवें में 18, चौदहवें में 18, और पन्द्रहवें में 23, इस तरह कुल 288

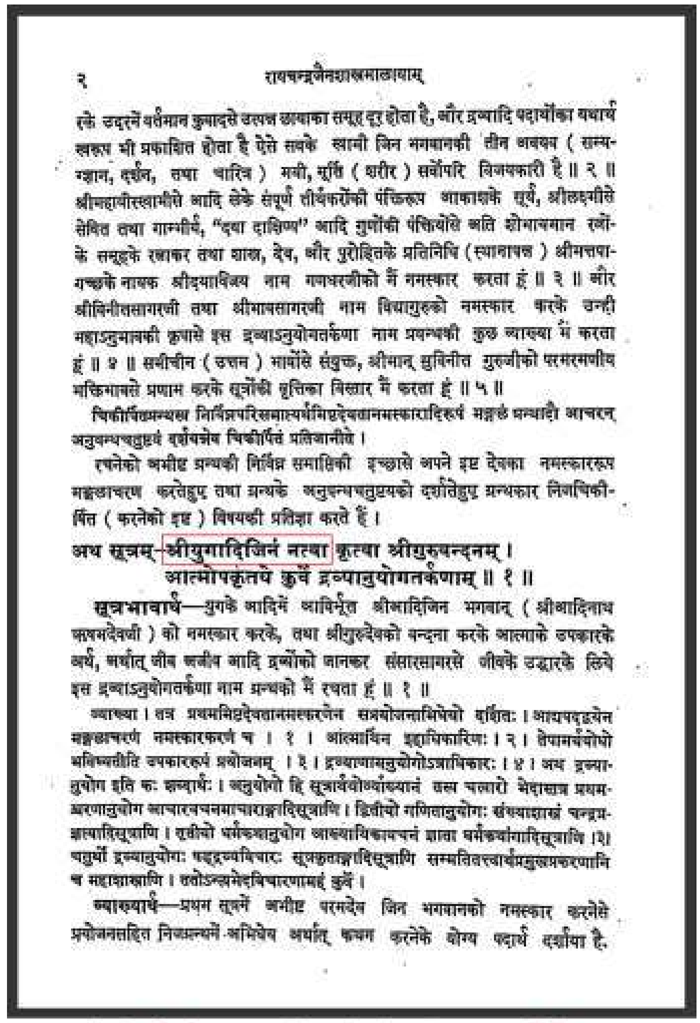

२ रायचन्द्रजैनशास्त्रमालायाम्

रके उदयनें वर्तमान कुवादसे उत्पन्न छायाका समूह दूर होता है, और द्रव्यादि पदार्थोंका यथार्थ स्वरूप भी प्रकाशित होता है ऐसे सबके स्वामी जिन भगवानकी तीन अवयव (सम्यग्ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्र) मयी, मूर्ति (शरीर) सर्वोपरि विजयकारी है ॥ २ ॥ श्रीमहावीरस्वामीसे आदि लेके संपूर्ण तीर्थंकरोंकी पंक्तिरूप आकाशके सूर्य, श्रीलक्ष्मीसे सेवित तथा गाम्भीर्य, "दया दाक्षिण्य" आदि गुणोंकी पंक्तियोंसे अति शोभायमान रत्नोंके समूहके रत्नाकर तथा शास्त्र, देव, और पुरोहितके प्रतिनिधि (स्थानापन्न) श्रीमत्तपागच्छके नायक श्रीदयाविजय नाम गणधरजीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ ३ ॥ और श्रीविनीतसागरजी तथा श्रीभावसागरजी नाम विद्यागुरुको नमस्कार करके उन्हीं महाऽनुभावकी कृपासे इस द्रव्याऽनुयोगतर्कणा नाम प्रबन्धकी कुछ व्याख्या मैं करता हूं ॥ ४ ॥ समीचीन (उत्तम) भावोंसे संयुक्त, श्रीमान् सुविनीत गुरुजीको परमरमणीय भक्तिभावसे प्रणाम करके सूत्रोंकी वृत्तिका विस्तार मैं करता हूं ॥ ५ ॥

चिकीर्षितग्रन्थस्य निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थमिष्टदेवतानमस्कारादिरूपं मङ्गलं ग्रन्थादौ आचरन् अनुबन्धचतुष्टयं दर्शयन्नेव चिकीर्षितं प्रतिजानीते ।

रचनेको अभीष्ट ग्रन्थकी निर्विघ्न समाप्तिकी इच्छासे अपने इष्ट देवका नमस्काररूप मङ्गलाचरण करतेहुए तथा ग्रन्थके अनुबन्धचतुष्टयको दर्शातेहुए ग्रन्थकार निजचिकीर्षित (करनेको इष्ट) विषयकी प्रतिज्ञा करते हैं ।

अथ सूत्रम्-श्रीयुगादिजिनं नत्वा कृत्वा श्रीगुरुवन्दनम् ।
आत्मोपकृतये कुर्वे द्रव्यानुयोगतर्कणाम् ॥ १ ॥

सूत्रभावार्थ—युगके आदिमें आविर्भूत श्रीआदिजिन भगवान् (श्रीआदिनाथ ऋषभदेवजी) को नमस्कार करके, तथा श्रीगुरुदेवको वन्दना करके आत्माके उपकारके अर्थ, अर्थात् जीव अजीव आदि द्रव्योंको जानकर संसारसागरसे जीवके उद्धारके लिये इस द्रव्याऽनुयोगतर्कणा नाम ग्रन्थको मैं रचता हूं ॥ १ ॥

व्याख्या । तत्र प्रथममिष्टदेवतानमस्करणेन सप्रयोजनाभिधेयो दर्शितः । आद्यपदद्वयेन मङ्गलाचरणं नमस्कारकरणं च । १ । आत्मार्थिन इहाधिकारिणः । २ । तेषामर्थबोधो भविष्यतीति उपकाररूपं प्रयोजनम् । ३ । द्रव्याणामनुयोगोऽत्राधिकारः । ४ । अथ द्रव्यानुयोग इति कः शब्दार्थः । अनुयोगो हि सूत्रार्थयोर्व्याख्यानं तस्य चत्वारो भेदास्तत्र प्रथमश्चरणानुयोग आचारवचनमाचाराङ्गादिसूत्राणि । द्वितीयो गणितानुयोगः संख्याशास्त्रं चन्द्रप्रज्ञप्त्यादिसूत्राणि । तृतीयो धर्मकथानुयोग आख्यायिकावचनं ज्ञाता धर्मकथाङ्गादिसूत्राणि ।३। चतुर्थो द्रव्यानुयोगः षड्द्रव्यविचारः सूत्रकृताङ्गादिसूत्राणि सम्मतितत्त्वार्थप्रमुखप्रकरणानि च महाशास्त्राणि । ततोऽन्यमेदविचारणामहं कुर्वे ।

व्याख्यार्थ—प्रथम सूत्रमें अभीष्ट परमदेव जिन भगवानको नमस्कार करनेसे प्रयोजनसहित निजग्रन्थमें अभिधेय अर्थात् कथन करनेके योग्य पदार्थ दर्शाया है.

राजा भोजदेव विरचित द्रव्यानुयोगतर्कणा पेज नं. 2 पर आदिजिन का नमन

श्लोक हैं।

यह ग्रन्थ रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला से कार्तिक वदि 12 रविवार विक्रम संवत् 1963 में प्रकाशित हुआ है। इसके संशोधक पं. जवाहरलाल साहित्याचार्य दिगम्बर जैन हैं।

प्राकृत भाषा का ग्रन्थ द्रव्यसंग्रह राजा भोज के सम्बन्धी के लिये लिखा गया-

राजा भोज के सम्बन्धी श्रीपाल को रत्नत्रय धारण करने के लिए श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव ने पहले प्राकृत भाषा में द्रव्यसंग्रह लिखा, उपरान्त उसे और अधिक समझने के लिए प्राकृत भाषा में ही बृहद्द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ के प्रारंभ में ही लिखा है-

''अथ मालवदेशे धारानामनगराधिपतिराजाभोजदेवाभिधानकलिकालचक्रवर्ति-सम्बन्धिनः श्रीपालमण्डलेश्वरस्य सम्बन्धिन्याश्रमनामनगरे श्रीमन्मुनिसुव्रततीर्थंकरचैत्यालये शुद्धात्मद्रव्यसंवित्तिसमुत्पन्न.....''

इसमें राजा भोजदेव को मालव देश की धारा नगरी के अधिपति और कलिकालचक्रवर्ती कहा गया है।

सोच को सुस्त मत होने दें

(तकनीक का उपयोग करें, पर उसे अपनी बुद्धि पर हावी न होने दें)

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

आधुनिक युग ने मनुष्य के जीवन को जितना सहज बनाया है, उतना ही चुपचाप उसकी स्वाभाविक क्षमताओं को सीमित भी किया है। तकनीक ने हमारे हाथों को सुविधा दी है, पर कहीं न कहीं हमारे मस्तिष्क की सक्रियता को चुनौती भी दी है। आज हम हर छोटे-बड़े कार्य के लिए उपकरणों पर निर्भर होते जा रहे हैं—चाहे वह रास्ता ढूँढ़ना हो, गणना करना हो या किसी जानकारी को याद रखना।

कभी ऐसा समय था, जब मनुष्य अपनी स्मरण-शक्ति और बुद्धि के सहारे जीवन की राह तय करता था। रास्ते केवल नक्शों में नहीं, बल्कि दिमाग में बसते थे। लोग बिना किसी सहारे के दूर-दूर तक पहुँच जाते थे। पर आज, एक क्लिक के सहारे सब कुछ उपलब्ध होने लगा है, और इसी सहजता ने हमारी मानसिक सतर्कता को धीरे-धीरे कम कर दिया है।

तकनीक का उद्देश्य मनुष्य की सहायता करना है, उसका स्थान लेना नहीं। जब हम हर कार्य के लिए मशीनों पर निर्भर हो जाते हैं, तब हमारी सोचने-समझने की क्षमता कुंठित होने लगती है। यह स्थिति धीरे-धीरे हमें उस अवस्था में पहुँचा देती है, जहाँ हम स्वयं निर्णय लेने से भी कतराने लगते हैं।

रास्तों की पहचान का क्षय : पहले लोग किसी स्थान तक पहुँचने के लिए प्रमुख चिन्ह—पेड़, मंदिर, चौक—याद रखते थे। एक बार जाने के बाद रास्ता स्मृति में बस जाता था। आज हम जीपीएस पर इतने निर्भर हो गए हैं कि कई बार रोज़ आने-जाने वाले मार्ग भी याद नहीं रहते।

गणना की आदत का लोप : पहले दुकानदार बिना किसी मशीन के तुरंत हिसाब जोड़ लेते थे। आज छोटे-छोटे जोड़-घटाव के लिए भी मोबाइल का कैलकुलेटर खोलना पड़ता है। इससे हमारी मानसिक गणना की क्षमता कमजोर होती जा रही है।

स्मरण-शक्ति में गिरावट : कभी लोगों को अपने प्रियजनों के कई फोन नंबर कंठस्थ रहते थे। अब मोबाइल में नंबर सेव होने के कारण हमें अपना ही नंबर याद करने में कठिनाई होती है।

निर्णय लेने में असमर्थता : पहले लोग अनुभव और विवेक से निर्णय लेते थे। आज हर छोटी बात के लिए इंटरनेट पर राय ढूँढ़ते हैं—क्या पहनें, क्या खाएँ, कहाँ जाएँ—मानो स्वयं निर्णय लेने का आत्मविश्वास कम हो गया हो।

शारीरिक निष्क्रियता का बढ़ना : पास की दूरी भी वाहन से तय करने की आदत ने शरीर की तरह मस्तिष्क को भी आलसी बना दिया है। पैदल चलने से जहाँ शरीर सक्रिय रहता है, वहीं मन भी सजग होता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि सुविधा धीरे-धीरे हमारी स्वाभाविक क्षमताओं को पीछे धकेल रही है। स्मरण-शक्ति, तर्कशक्ति और विश्लेषण—ये केवल जन्मजात गुण नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास से विकसित होने वाली क्षमताएँ हैं। यदि इनका उपयोग न किया जाए, तो ये क्षीण होने लगती हैं।

यह सही है कि तकनीक ने जीवन को गति दी है, लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि अत्यधिक निर्भरता हमें भीतर से कमजोर बना सकती है। हमें यह समझना होगा कि सुविधा और आलस्य में एक सूक्ष्म अंतर होता है। सुविधा हमें आगे बढ़ाती है, जबकि आलस्य हमें भीतर से जड़ बना देता है।

इसलिए आवश्यक है कि हम अपने मस्तिष्क को निरंतर सक्रिय रखें। छोटी-छोटी गणनाएँ स्वयं करने की आदत डालें, रास्तों को याद रखने का प्रयास करें, और समस्याओं का समाधान अपने विवेक से खोजें। यही अभ्यास हमारी मानसिक शक्ति को जीवंत बनाए रखेगा।

अंततः, मनुष्य की असली शक्ति उसकी सोचने और समझने की क्षमता में निहित है। यदि यह क्षमता कमजोर पड़ जाए, तो बाहरी प्रगति भी अधूरी रह जाती है। इसलिए, तकनीक का उपयोग करें, पर उसे अपनी बुद्धि पर हावी न होने दें—क्योंकि एक जागरूक और सक्रिय मस्तिष्क ही सच्चे अर्थों में जीवन को समृद्ध बनाता है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद'' के स्वर्ण जयंती समारोह का राष्ट्रीय आयोजन शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भव्यतापूर्वक सम्पन्न

देश में एकमात्र युवाओं की प्राचीन संस्था ''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद'' के ५०वें स्थापना वर्ष के अन्तर्गत शाश्वत तीर्थ अयोध्या में स्वर्ण जयंती समारोह का राष्ट्रीय आयोजन भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सन् १९७७ में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित इस युवा परिषद संस्था का १ जनवरी २०२६ को ५०वां स्थापना दिवस मनाया गया था। पश्चात् ''युवा परिषद स्वर्ण जयंती वर्ष'' के अन्तर्गत वैशाख कृ. तृतीया, दिनांक ०५ अप्रैल २०२६ को शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भव्य समारोहपूर्वक उक्त आयोजन सम्पन्न हुआ।

भगवान ऋषभदेव आदि पांच जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या में सर्वोच्च जैन साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में आयोजित इस समारोह को दीप प्रज्जवलन के साथ उद्घाटित किया गया। साथ ही युवा परिषद को सदैव मार्गदर्शन प्रदान करने वाली प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न श्री चन्दनामती माताजी और परामर्श प्रमुख कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी की भी गौरवमयी उपस्थिति प्राप्त हुई।

अतिथियों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन गाजियाबाद ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान की। आपके साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेश जैन, आई.ए.एस. भोपाल, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन भोपाल, श्री हसमुख जैन गांधी, इन्दौर, श्री अजित जैन पाण्ड्या कलकता, श्री कमल कासलीवाल मुम्बई तथा श्री संजय पापडीवाल संभाजीनगर, श्री कैलाशचन्द जैन सर्राफ लखनऊ, संघपति श्री अनिल कुमार जैन, प्रीत विहार दिल्ली, डॉ. अनुपम सौ.निशा जैन इन्दौर, श्री जवाहरलाल जैन सिकन्द्राबाद, श्री शीतल सौ., सुवर्णा पाटनी, नासिक, श्री जितेन्द्र सौ. सपना जैन लुहाड़ियां, खण्डवा, श्री विनोद सौ शकुन्तला जैन उत्तमनगर, दिल्ली, श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल मुम्बई, श्री प्रकाशचन्द जैन लाडून वाले मुम्बई, श्री चन्द्रशेखर कासलीवाल चांदवाड़ आर्किटेक्ट श्री विशाल जैन लखनऊ, श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर, श्री सुधीर जैन एवं श्री सोनू जैन पद्मावती पुरवार जैन समाज इन्दौर आदि उपस्थित थें।

कुशल संचालन राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बिजेन्द्र जैन शाहदरा, दिल्ली एवं संयुक्त महामंत्री श्री दिलीप जैन जयपुर द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ में सौ. वाणी जैन इन्दौर के द्वारा णमोकार महामंत्र के भजन पर सुन्दर वन्दना प्रस्तुत की गई।

सर्वप्रथम समारोह में पधारे अतिथियों एवं युवा परिषद के कार्यकर्त्ताओं का संस्था की ओर से मुख्य संयोजक श्री विजय कुमार जैन द्वारा उद्बोधन देकर सभी का स्वागत किया गया। पश्चात् युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री उदयभान जैन ने युवा परिशद की स्थापना से लेकर ५० वर्षीय स्वर्णिम काल तक युवा परिषद की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

युवा परिशद द्वारा अपने ५०वें स्थापना दिवस के अवसर पर स्वर्ण जयंती समारोह मनाते हुए इस संस्था के प्राण और लम्बे अरसे तक अध्यक्ष रह चुके कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी को **''जैन शासन युगपुरूष सम्मान''** से अभिनंदित किया गया। पूज्य स्वामीजी का अहर्निश योगदान एवं ब्र. रवीन्द्रकुमार जैन के रूप में उनकी अनथक सेवाएं और उत्साह भूलायें नहीं जा सकता है। इसके साथ ही पूज्य स्वामीजी के द्वारा देश में जैन संस्कृति के उत्थान हेतु किये गये अनेकानेक प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार और विकास तथा तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के प्रति जो अपना समर्पण किया गया है, वह भी उन्हें एक अतुलनीय व्यक्तित्व एवं युगपुरूष की उपमा देता है। अत: युवा परिषद द्वारा अपने स्वर्ण जयंती पर पूज्य स्वामीजी को ''जैन शासन युगपुरूष सम्मान'' प्रदान करके हर्ष एवं गौरव का अनुभव किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी को तिलक एवं विशाल माल्यार्पण आदि के साथ उन्हें अत्यन्त सुन्दर प्रशस्तिपत्र देकर ''जैनशासन युगपुरूष'' की उपाधि प्रदान की गई। पूज्य सवामीजी के सम्मान में मंच पर उपस्थित समस्त केन्द्रीय पदाधिकारीगण, अतिथिगण एवं विभिन्न शाखाओं से पधारे अध्यक्ष एवं मुख्य पदाधिकारियों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

युवा परिषद द्वारा गत् वर्ष २०२५ से ''कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी कर्मठ व्यक्तित्व पुरस्कार'' नामक पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। सर्वप्रथम २०२५ में यह पुरस्कार श्री कमल जैन कासलीवाल, मुम्बई को प्रदान किया गया था। पुन: इस वर्ष यह कर्मठ व्यक्तित्व पुरस्कार समर्पण उत्तर प्रदेश– उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन सिकन्द्राबाद को उनकी सामाजिक सेवाओं के प्रति प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में तिलक, पगड़ी, अंगवस्त्र के साथ में विशाल प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया और पुरस्कार की ५१०००/– रूपये सम्मान राशि भी पुरस्कृत को देकर युवा परिशद ने अपना गौरव वृद्धिगंत किया। इस अवसर पर श्री जवाहर लाल जी के बेटी दामाद एवं उनके साथ में श्रीमती मीनू जैन दिल्ली भी उपस्थित रही। प्रतिवर्ष यह पुरस्कार श्री जितेन्द्र सौ., सपना जैन लुहाड़ियां खण्डवा के सौजन्य से प्रदान किया जाता है अत: सम्मान में आप भी साक्षात् उपस्थित रहें। यह सम्मान संस्थान के पदाधिकारी व मंचासीन अतिथियों ने सम्पन्न किया।

समारोह में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. जीवन प्रकाश जैन ने सभी शाखा के पदाधिकारियों का स्वागत, अभिनन्दन करते हुए सर्वप्रथम पधारे हुए सैकड़ों युवासाथियों का आभार माना, जिन्होनें दूर दूर से इस स्वर्ण जंयती में पधारकर कार्यक्रम को सफल किया। साथ ही मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों ने कार्यक्रम की गरिमा को वृद्धिगंत करते ज्ञापित किया। मुख्य रूप से अध्यक्ष महोदय ने समस्त युवा परिशद शाखाओं को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे इस स्वर्ण जयंती वर्ष में अपने–अपने गांव, नगर, शहर में अवश्य ही स्वर्ण जयंती समारोह का कम से कम एक आयोजन करके इस युवा परिषद की प्रभावना में चार चांद लगाए। उन्होनें बताया कि देश में युवाओं की यह एकमात्र सबसे प्राचीन संस्था है, जो अपने ५० वर्षीय सफल कार्यकाल को पूर्ण कर रही है। अत: देशभर में इसकी प्रभावना के लिए उन्होनें सभी शाखाओं का आह्वान किया। साथ ही युवा परिषद के कार्यकर्त्तागण विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समाज और धर्म के कार्यों में सतत् संलग्न रहकर अपनी उत्कृष्ट सेवाएं देते रहें, इस बात के लिए भी उन्होनें सभी से विशेष आह्वान किया।

समारोह में सान्निध्य प्रदान कर रहे संतों का भी सभी को मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम मुनि श्री शुद्धोपयोगसागर जी महाराज ने स्वर्ण जयंती पर सभी युवाओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि एक बीज आज वटवृक्ष के रूप में उपस्थित है। उन्होंने प्रेरित किया कि सभी युवा इस संस्था और अपने कार्यकलापों की इतनी सुगंधी फैलाएं कि देश के हर युवा को इस संस्था के साथ जुड़ने की की प्रेरणाएं प्राप्त हों।

समापन अवसर पर परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सभी युवासाथियों को आशीर्वाद देते हुए इस बात का गौरव किया कि जैन आगम के अनुरूप समाज में नवदम्पत्तियों के विवाह को प्रोत्साहित करते हुए स्वर्ण श्री उपाधि अंलकरण योजना का आज शुभारम्भ किया गया है। इसी के साथ उन्होनें इस युवा परिषद के संस्थापक आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के नाम पर भी प्रतिवर्ष प्रदान किये जाने हेतु एक पुरस्कार स्थापित करने की प्रेरणा दी। साथ ही पूज्य माताजी ने समस्त युवाओं को अपने जीवन में चारित्रवान एवं देव शास्त्र गुरू के प्रति भक्तिमान बने रहने की प्रेरणा देकर इस युवा परिषद के ५०वें स्वर्ण जयंती पर मंगल आशीर्वाद भी प्रदान किया।

युवा परिषद की स्वर्ण जयंती पर परम पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणापूर्वक राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवन प्रकाश जैन ने प्रतिवर्ष आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज पुरस्कार समपर्ण'' करने की घोषणा की। पूज्य पीठाधीश स्वामीजी की आज्ञानुसार इस पुरस्कार की सम्मान राशि १,११,०००/— रूपये प्रतिवर्ष प्रदान करने का निर्णय हुआ, जिसके लिए श्री हसमुख उर्मिला जैन गांधी, इन्दौर, ने सहर्ष सौजन्य प्रदान करने की भी घोषणा की। अत: आगामी वर्ष से यह पुरस्कार जैन समाज के किसी गणमान्य व्यक्तित्व को प्रदान करने का शुभारम्भ किया जायेगा।

कोनकोण्डला, प्रसिद्ध दिगम्बर जैन आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की जन्म स्थली

आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में कोनकोण्डला में स्थित प्रसिद्ध दिगम्बर जैन आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की जन्म स्थली जो एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और प्राचीन जैन तीर्थ स्थल है। यहां की पहाड़ियों और गुफाओं में कुन्दकुन्द स्वामी जी ने साधना अर्चना की थी। इस क्षेत्र में प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर और प्रतिमाएं स्थापत्य कला का अदूभुत नमूना है। यह स्थान जैन धर्म के अनुयायियों के लिए पवित्र और दर्शनीय स्थल है। ऐसे ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व वाले दिगम्बर जैन तीर्थ स्थल के जीर्णोद्धार के लिए सर्वे का कार्य भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कराया जा रहा है। पूर्व तथा वर्तमान में कुछ जमीन क्रय की गई थी। राज्य सरकार द्वारा उक्त स्थान का ए.एस. आई द्वारा सर्वे कराने का आदेश दिया जा चुका है सर्वे के पश्चात् यह भूमि दिगम्बर जैन समुदाय को सौप दी जाएगी। जिस पर सफाई का कार्य भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा करवा दिया गया है।

इसी सन्दर्भ में शनिवार 2 मार्च 2026 को श्री डी. सुरेन्द्र हेग्ड़े जी की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक बैंगलोर स्थित जैन कर्नाटक भवन में सम्पन्न हुई। बैठक में श्री जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद, श्री अशोक जैन सेठी, बैंगलोर, श्री विमुक्त जैन, बैंगलोर, श्री विनोद जैन बाकलीवाल, कर्नाटक अंचल अध्यक्ष, श्री निहालचन्द जैन, बैंगलोर आदि अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें। श्री जम्बू प्रसाद जी सहमति से श्री संजय जैन ठोलिया, तमिलनाडु अंचल अध्यक्ष के नेतृत्व में श्री एन.के.सुरेश जी इस कार्य की देख रेख कर रहे है। विश्वास है कि शीघ्रताशीघ्र ही परम पूज्य 108 कुन्दकुन्दाचार्य जी की जन्मभूमि कोनकोण्डला का संरक्षण व संवर्द्धन का कार्य आचार्य श्री के प्रति हमारी विनयांजलि होगी।

श्री सम्मेदशिखरजी में निर्मित होने वाले बहुउद्देशीय भवन

27-28 मार्च 2026 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के श्री सम्मेदशिखरजी में निर्मित होने वाले बहुउद्देशीय भवन की संरचना के लिए अहमदाबाद से वरिष्ठ आर्किटेक्ट श्री देवेश जी देसाई को श्री सम्मेदशिखर जी बुलाकर साईट का निरीक्षण कराया तथा गुणायतन द्वारा निर्माणाधीन ऑडिटोरियम आदि का भी विजिट कराया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन अहमदाबाद, श्री राजा जैन, हैदराबाद, श्री राजीव जैन रानीपॉलीमर्स, दिल्ली, श्री प्रदीप जी जैन बाकलीवाल, अहमदाबाद,

श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद एवं श्री सुमन सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय मधुबन आदि महानुभाव उपस्थित रहे तथा 2 दिन तक लगातार चर्चा के उपरान्त यह निष्कर्श आया कि हम इस भवन को इस प्रकार से बनाए जिससे कि श्री सम्मेदशिखरजी आने वाले प्रत्येक यात्री तीर्थक्षेत्र कमेटी की महत्ता को समझ सकें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी में जो कार्य किए है, उनको जान सकें तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ सकें। इस हेतु तलघर एवं उसके ऊपर चार मंजिल का भवन बनाने का विचार विमर्ष हुआ। निर्मित होने वाला कुल ऐरिया लगभग 30 हजार वर्ग फुट रहेगा, जिसमें भारतवर्ष के समस्त तीर्थो की प्रदर्शनी, डिजिटल साईन बोर्ड छोटे-छोटे ऑडिटोरियम, कैफेटेरिया, रिशेपसन, यात्री विश्रामालय, स्टोर, कॉन्फ्रेन्स रुम आदि का विनियोजन करने पर विचार विमर्ष हुआ। श्री देसाई जी ने कहा कि मेरा प्रयास रहेगा कि 15 दिन में मैं एक रुप रेखा बनाकर आपको प्रेषित कर दूंगा।

प्रस्तुती - जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद

सल्लेखना मृत्यु नहीं महोत्सव है

पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य के गृहस्थ जीवन के पूज्य पिता श्री की दीर्घ तप, साधना और संयममय जीवन के उपरान्त परम पूज्य समाधिस्थ गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री १०८ विश्वमित सागर जी महाराज के सान्निध्य में ब्रह्मचारी श्री सुखादा भैयाजी एवं ब्रह्मचारी श्री लालू भैया जी की देखरेख में समता पूर्वक शान्त भावों से श्री दिगम्बर जैन तीर्थ करगुंवा झांसी में समाधि हुई। आपने अपने जीवन के अन्तिम श्रणों में भी साधना, त्याग, संयम धारण किया।

मुनि श्री १०८ विष्णु सागर जी महाराज की पावन स्मृति में १८ मार्च २०२६ मावलंकर सभागार, कान्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इन्डिया नई दिल्ली में एक भव्य विनयाजंलि सभा एवं गुणानुवाद का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आचार्य श्री १०८ प्रज्ञसागर जी महाराज, आचार्य श्री लोकेश मुनि जी, श्री योग भूषण जी महाराज, श्री देवेन्द्र ब्रह्मचारी सहित अनेक साधु संतों का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

सांसद श्री मनोज तिवारी जी, पूर्व वरिष्ठ नेता वं मंत्री श्री दिग्विजय सिंह, कांग्रेस नेता श्री प्रमोद तिवारी आदि अनेकों नेता उपस्थित रहें। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद, ग्लोबल महासभा के अध्यक्ष श्री जमनालाल जी हपावत, दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री मणिन्द्र जैन जी, श्री धमेन्द्र जी सेठी, श्री हुकम काका जी सहित अनेकों संस्थाओं के अध्यक्ष,मंत्री आदि उपस्थित रहें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन ने जैन धर्म में मृत्यु महोत्सव के महत्व को बताते हुए मुनि श्री के गृहस्थ जीवन की मर्यादाओं को निभाते हुए परिवार में संस्कारों का बीजारोपण किया तथा सल्लेखना के उद्देश्य आत्म शुद्धि, कर्मो का क्षय और मोक्ष प्राप्ति पर प्रकाश डाला। जैन आगम में जीवन के अन्तिम क्षणों में धर्म साधना, त्याग के साथ काय सल्लेखना और कषाय सल्लेखना करते हुए मृत्यु को महोत्सव रूप अंगीकार करने की प्रमुखता दी गई है।

विश्व नमोकार महामंत्र दिवस : मौन से महाशक्ति तक का वैश्विक जागरण

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

इतिहास हमेशा शोर से नहीं बनता, कभी-कभी वह मौन में लिखा जाता है।9 अप्रैल 2026 को ऐसा ही एक मौन, लेकिन विराट इतिहास रचा गया—जब 108 देशों में करोड़ों कंठों से एक साथ णमोकार मंत्र गूंजा। यह केवल उच्चारण नहीं था, यह आत्मा की सामूहिक जागृति थी। यह वह क्षण था, जब जैन समाज ने दुनिया को बिना कुछ कहे बहुत कुछ कह दिया।णमोकार मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह किसी नाम, रूप या संप्रदाय में सीमित नहीं है। यह गुणों को प्रणाम करता है—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। यह क्रम केवल वंदना नहीं, बल्कि आत्मा के उत्कर्ष की यात्रा है। पाँच पदों और 35 अक्षरों में समाहित यह मंत्र हमें सिखाता है कि ऊँचा उठने का पहला कदम है—झुकना। दिगंबर और श्वेतांबर, दोनों परंपराओं में इसकी समान श्रद्धा इस सत्य को स्थापित करती है कि जैन धर्म की आत्मा एक है, अविभाज्य है, और शाश्वत है।इस वर्ष का विश्व णमोकार दिवस केवल एक आयोजन नहीं था—यह अनुशासन का उत्सव था। एक समय, एक परिधान, एक स्वर—यह दृश्य स्वयं में संदेश था कि जब समाज भीतर से एक हो जाता है, तो बाहरी विभाजन स्वतः समाप्त हो जाते हैं। Jain International Trade Organization (जीतो) की टीम ने जिस समर्पण से इस आयोजन को वैश्विक स्वरूप दिया, वह यह दर्शाता है कि संकल्प जब सामूहिक बन जाए, तो असंभव भी संभव हो जाता है।यह भी एक गहरा संकेत है कि इस देश का नाम 'भारत' प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से जुड़ा है। यह केवल एक ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि उस चेतना का स्मरण है, जिसमें संयम है, त्याग है और अहिंसा जीवन का आधार है।आज विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता शांति है—और शांति का सबसे सशक्त मार्ग है अहिंसा। महात्मा गांधी ने इसी अहिंसा को अपना अस्त्र बनाकर यह सिद्ध किया कि सत्य और संयम के बल पर भी इतिहास की दिशा बदली जा सकती है।पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1981 में लोकसभा में जैन धर्म के प्रभाव को स्वीकार करते हुए यह भाव व्यक्त किया था कि जैन सिद्धांत केवल एक समाज तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे भारत के जीवन में गहराई से समाहित हैं—इस अर्थ में सारा भारत ही जैन है।भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र

मोदी ने अपने वक्तव्यों में बार-बार कहा है कि जैन धर्म के अहिंसा और अनेकांत के सिद्धांत आज के विश्व के लिए मार्गदर्शक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि "जब दुनिया संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रही है, तब जैन दर्शन का संदेश—अहिंसा, अपरिग्रह और सह-अस्तित्व—मानवता को दिशा दे सकता है।" हाल के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब अनेक क्षेत्रों में युद्ध और तनाव के बाद शांति की पहलें दिखाई दे रही हैं, तब यह संदेश और भी प्रासंगिक हो उठता है कि स्थायी समाधान केवल अहिंसा और संवाद से ही संभव है।गृह मंत्री श्री अमित शाह ने 9 अप्रैल के अवसर पर अपने उद्बोधन में जैन समाज की अनुशासनशीलता, राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका और उसके मूल्यों को अनुकरणीय बताते हुए नमोकार मंत्र की अद्भुत विशेषताओं को रेखांकित किया, जो हम सभी के लिए गौरव का विषय है। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भी अनेक अवसरों पर जैन समाज के त्याग, संयम और नैतिकता को देश के लिए प्रेरणास्रोत माना है।जैन एकता की सच्ची पहचान तब प्रकट होती है, जब हम नाम और भेद से ऊपर उठते हैं। भजन सम्राट रवींद्र जैन ने 1981 में गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक के दौरान इन पंक्तियों के माध्यम से यही संदेश दिया था—"हम नहीं दिगंबर, श्वेतांबर, तेरह पंथी, स्थानकवासी,सब एक धर्म के अनुयाई, सब एक देव के विश्वासी।नित णमोकार का जाप करें, और पाठ करें भक्तामर का,हम जैनी—अपना धर्म जैन, इतना ही परिचय केवल हो।"ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी उस समय थीं—क्योंकि णमोकार केवल मंत्र नहीं, बल्कि एकता की चेतना है।विश्व णमोकार दिवस हमें एक प्रश्न देकर जाता है—क्या हम केवल मंत्र के उच्चारक हैं, या उसके साधक भी?क्योंकि मंत्र जपने से प्रभाव बनता है,पर मंत्र जीने से परिवर्तन होता है।और जिस दिन यह परिवर्तन भीतर उतर गया, उस दिन शायद दुनिया को शांति सिखाने के लिए किसी और उदाहरण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अनुपम आयोजन में सम्मिलित समाज जनों को बधाई, और जैन एकता के सर्वोच्च मंत्र णमोकार को हृदय में समाहित करते हुए पंच परमेष्ठि भगवंतों के चरणों में नमन।

मथुरा चौरासी में होगा 21-22 अक्टूबर को शतकोत्तर रजत वर्ष महोत्सव का उद्घाटन

22 अक्टूबर 1902, हां यह वही दिन था, जब भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की मथुरा चौरासी तीर्थ पर चल रही बैठक में यह आवश्यकता महसूस की गई, अब तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन के लिए अलग संस्था शुरू की जाये और तब शुरू हुई भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की। आज वही दिगंबर जैन समाज की एकमात्र संस्था है, जो पिछले 125 वर्षों से तीर्थों की सुरक्षा-संवर्धन करते हुए, बिना टूटे-बिखरे अनवरत सेवा कर रही है। अभी 02 अप्रैल को तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी, स्थापना वर्ष समिति के चेयरमैन जवाहर लाल जैन जी के दिशा-निर्देश पर मथुरा चौरासी में 125वें स्थापना वर्ष की शुरूआत से संबंधित कार्यक्रमों के लिए मथुरा चौरासी तीर्थ पर ही बैठक हुई। इस बैठक में दो दिवसीय आयोजन में विभिन्नि कार्यक्रमों के विषयों को लेकर चर्चा हुई।बैठक में दो दिवसीय आयोजन में विभिन्न कार्यक्रमों के विषयों को लेकर चर्चा हुई। मुख्य आयोजन स्थल, विभिन्न सत्रों के कार्यक्रम आदि पर विचार करते हुए श्री जवाहरलाल जैन जी ने कहा कि अगर इस आयोजन में साधु-संतों का सान्निध्य मिल जाये, तो चल-अचल तीर्थों का जो समावेश होगा, वह तीर्थक्षेत्र कमेटी के उद्देश्यों व समाज में जागरूकता के लिये सराहनीय कदम होगा। इस बैठक में मथुरा चौरासी से सुभाष जैन जी, संजीव जैन, राजीव जैन, हाथरस से संजीव जैन, भूरा भैय्या, गाजियाबद से मीनू जैन व शरद जैन (चैनल महालक्ष्मी) भी उपस्थित थे।

पीएनसी आगरा कार्यालय में शतकोत्तर रजत वर्ष कार्यक्रमों पर चर्चा

माननीय प्रदीप कुमार जैन जी (पीएनसी) के आगरा कार्यालय में 02 अप्रैल को भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी, स्थापना वर्ष समिति के चेयरमैन जवाहर लाल जैन जी की उपस्थिति में स्थापना वर्ष आयोजन के विभिन्न कार्यक्रमों, उनके आयोजन व सहभागिता को लेकर चर्चा हुई। इस बैठक में प्रदीप जैन जी ने कुछ प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला। बैठक में मनोज जैन संयोजक, आगरा मण्डल के अध्यक्ष जगदीश प्रसाद जैन जी, मथुरा चौरासी से संजीव जैन जी, राजीव जैन जी, हाथरस से संजीव जैन, भूरा भैय्या, गाजियाबाद से मीनू जैन के साथ शरद जैन (चैनल महालक्ष्मी) भी उपस्थित थे।

जैन नारी शक्ति का गौरव: सरिता एम.के. जैन का स्वर्ण मुकुट अलंकरण, दिल्ली में भव्य समारोह सम्पन्न

संपूर्ण भारतवर्ष की जैन नारी शक्ति की अग्रणी नेत्री श्रीमती सरिता महेंद्र कुमार जैन (चेन्नई) के स्वर्ण मुकुट अलंकरण एवं गुणानुवाद समारोह का भव्य आयोजन दिल्ली में अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। देशभर से आई महिलाओं की विशाल उपस्थिति ने कार्यक्रम को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जिसे दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती निशा जैन एवं उनकी टीम ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आकर्षक स्वागत गीत एवं नृत्य के माध्यम से अतिथियों का अभिनंदन किया गया।

दीप प्रज्वलन का पावन कार्य राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती विजया ताई रहाटकर एवं आरएमडी ग्रुप की चेयरपर्सन श्रीमती शोभा धारीवाल द्वारा संपन्न हुआ।

इसके पश्चात महिला महासभा की राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ज्योत्सना जैन ने स्वागत भाषण देते हुए श्रीमती सरिता जी को महिला सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण बताया और उनके सेवा कार्यों का संक्षिप्त गुणानुवाद करते हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में पूज्य संतों के आशीर्वचन में परम पूज्य भट्टारक स्वामी स्वस्ति श्री धवलकीर्ति जी महाराज ने सरिता जी के जन-सेवा, जैन पुरातत्व संरक्षण, साहित्य एवं दर्शन के प्रति समर्पण को अद्वितीय एवं विलक्षण बताते हुए कहा कि वे समाज के लिए एक अमूल्य रत्न हैं, जो हर परिस्थिति में तन-मन-धन से सेवा हेतु तत्पर रहती हैं।

वहीं परम पूज्य परंपराचार्य प्रज्ञसागर जी महाराज ने सरिता जी को समाज का मील का पत्थर बताते हुए उनके कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें "दानवीर श्राविका रत्न" की उपाधि से अलंकृत किया।

मुख्य अतिथि श्रीमती विजया ताई रहाटकर ने भावुक उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि सरिता जी के कार्यों को देखकर यह अनुभव होता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उन्होंने सरिता जी को समाज का गौरव बताते हुए शत-शत नमन किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. संगीता विनायका ने किया। समारोह के अंतर्गत समाज सेवा के प्रेरक कार्य भी किए गए, जिनमें 51 सिलाई मशीनों का वितरण आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को शिक्षा हेतु ₹21,000 की 10 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं देशभर से आई महिलाओं की उल्लेखनीय सहभागिता रही, जिनमें कोलकाता से मंजू पाटनी, जयपुर से डॉ. रश्मि कोठारी, इंदौर से मीना झांझरी ,सवाई माधोपुर, अजमेर, ग्वालियर, कोटा से सुनीता नागदा, अलीगढ़ से रचना जी, गाजियाबाद एवं समस्त दिल्ली की शाखाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

समारोह में उपस्थित सभी मुख्य अतिथियों का चंदन-इलायची की माला एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया तथा पूज्य आचार्य श्री द्वारा सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

श्रीमती सरिता एम के जैन: सेवा, समर्पण और नेतृत्व की अद्भुत मिसाल उल्लेखनीय है कि श्रीमती सरिता एम.के. जैन (चेन्नई) भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के 125 वर्षों के इतिहास में प्रथम महिला राष्ट्रीय अध्यक्ष बनीं, जिन्हें सर्वसम्मति से यह दायित्व प्रदान किया गया।

साथ ही वर्ष 2018 में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में आयोजित 12 वर्षीय जैन कुंभ — गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व भी उन्हें परम पूज्य स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी द्वारा प्रदान किया गया। उनके नेतृत्व में यह आयोजन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत भव्य रूप में संपन्न हुआ।

श्रीमती सरिता एम.के. जैन जैन समाज में सेवा, समर्पण, तीर्थ संरक्षण, मुनि भक्ति एवं जीर्णोद्धार के क्षेत्र में एक प्रेरणास्रोत के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका व्यक्तित्व नारी शक्ति, संस्कार और समाजसेवा की अनुपम मिसाल प्रस्तुत करता है।

महावीर ने जो जिया वही कहा - प्रो.फूलचंद जैन 'प्रेमी'

(केंद्रीय विश्वविद्यालय दिल्ली में तीर्थंकर महावीर विचार संगोष्ठी संपन्न)

३० मार्च २०२६, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग,दर्शन संकाय द्वारा जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर जन्मकल्याणक (चैत्र शुक्ल त्रयोदशी)के पावन अवसर पर एक विचार संगोष्ठी "तीर्थंकर भगवान् महावीर और उनका जीवन दर्शन" विषय पर आयोजित की गई , जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान् प्रो.फूलचंद जैन प्रेमी (पूर्व अध्यक्ष – जैनदर्शन विभाग , सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ,वाराणसी) ने कहा कि तीर्थंकर भगवान् महावीर ने परस्पर सद्भाव और एकता के लिए अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, सर्वोदय कल्याणकारी और समन्वयकारी जैसे अनेक सिद्धान्तों व जीवन मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठापित करने हेतु क्रान्तिकारी कार्य किये । यह ऐसी क्रान्ति थी ,जिसे व्यक्तिगत जीवन का अपूर्व पराक्रम कहा जा सकता है। कथनी और करनी में समानता के प्रबल पक्षधर होने के कारण उन्होंने जो कुछ कहा, उसे उन्होंने स्वयं करके दिखाया।

उन्होंने बताया कि वे शान्तिप्रिय थे और अहिंसा में विश्वास रखते थे । अतः अहिंसक समाज रचना के लिए सदा प्रयत्नशील रहे । उनका कहना था कि समाज परिवर्तन के लिए क्रान्ति आवश्यक है, पर वह क्रान्ति अहिंसक हो । उनका मानना था कि जिस क्रान्ति में हृदय परिवर्तन की क्षमता हो, वही सबसे बड़ी क्रान्ति है । इसीलिए वे जीवन भर सदा विश्वबन्धुत्व की शिक्षा देते रहे. उन्होंने ना तो कभी जातिवाद या वर्ण व्यवस्थाका समर्थन किया, न सम्प्रदायवाद और न कभी क्षेत्रीयतावाद का । मनुष्य को सदा मनुष्य जाति के रूप में देखा। एक ऐसी जाति के रूप में जिसमें न कोई ऊंच हो, न नीच और न कोई बड़ा, न छोटा, वरन पूरा समुदाय स्नेह, सद्भाव, सहयोग, सहकार की धुरी पर खड़ा हो।

संगोष्ठी के आरम्भ में प्राकृत मंगलाचरण शोध छात्रा रिद्धि जैन ने किया तथा संस्कृत मंगलाचरण ब्राह्मी सुंदरी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने किया । सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रो.कुलदीप ने कहा कि हम स्वयं को न जानकार पर चिंता में लगे रहते हैं , महावीर हमें स्वयं को जानना सिखाते हैं । शोध छात्रा श्रुति जैन ने मुख्य वक्ता का अकादमिक परिचय प्रस्तुत किया एवं अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन भी किया । संगोष्ठी का सञ्चालन करते हुए जैनदर्शन के आचार्य संगोष्ठी संयोजक प्रो. अनेकांत कुमार जैन ने कहा कि हम विश्वविद्यालय में प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्मकल्याणक एक गोष्ठी के रूप में अकादमिक रूप से अवश्य मनाते हैं ताकि उनके महान विचारों और सिद्धांतों को बड़े बड़े विद्वानों के मुख से सुनकर विद्यार्थी उनसे परिचित हो सकें । उन्होंने ब्राह्मी सुंदरी कन्या विद्यालय की प्राचार्य डॉ अल्पना जैन एवं छात्राओं के साथ एक विशेष परिचर्चा करके उन्हें विश्वविद्यालय का विस्तृत परिचय दिया तथा प्रवेश हेतु प्रेरित किया।

इस अवसर पर प्रो. अनेकांत कुमार जैन की पुस्तक ' महावीर की आत्मकथा' का विमोचन किया गया तथा उसे सभी को वितरित किया गया एवं दर्शन संकाय में नव नियुक्त सभी अध्यापकों का विशेष अभिनन्दन किया गया।

समारोह के अध्यक्ष एवं दर्शन संकाय पीठप्रमुख प्रो.ए.एस. अरावमुदन जी ने भगवान् महावीर के विचारों को आत्मसात करने पर बल दिया । समारोह के मुख्य अतिथि ब्राह्मी सुंदरी कन्या महाविद्यालय,दिल्ली के ट्रस्टी श्री बज्रसेन जैन जी ने शास्त्र की रक्षा में संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता बतलाई । छात्र कल्याण प्रमुख प्रो. मार्कंडेय नाथ तिवारी जी ने प्रो. प्रेमी की श्रुत साधना की प्रशंसा करते हुए उनके द्वारा पूरे परिवार को श्रुत साधना में लगाने को ऐतिहासिक और प्रेरणास्प्रद बताया । दर्शन संकाय के सभी आचार्य सहित साहित्य संस्कृति संकाय प्रमुख प्रो. कल्पना जैन आदि विश्वविद्यालय के अनेक आचार्य, शोधार्थी एवं छात्र छात्राओं की गरिमापूर्ण उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढाई । सम्पूर्ण संगोष्ठी का कुशल निर्देशन जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो.वीरसागर जैन के द्वारा किया गया।

जैन एकता के मंच पर मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हसमुख गांधी सहित चार विभूतियों का किया महावीर अलंकरण सम्मान दिगम्बर-श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फेडरेशन का भव्य आयोजन

भगवान महावीर स्वामी के आदर्शों पर आधारित महावीर अलंकरण समारोह में इंदौर जैन समाज की एकजुटता, सेवा भावना और सामाजिक समरसता का प्रेरक दृश्य देखने को मिला। दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के संयुक्त तत्वावधान में भगवान महावीर के 2625वें जन्म कल्याणक अवसर पर भगवान महावीर के दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता पर वृहद् संवाद के अवसर पर संगीत कला अकादमी, मनमोहन मेहता ऑडिटोरियम इंदौर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक के पूर्व 29 मार्च 2026आयोजित इस भव्य समारोह में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वरिष्ठ समाजसेवी हसमुख जैन गांधी, चंदनमल जैन चौरड़िया, हंसराज जैन एवं संतोष कुमार जैन को उनके उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के लिए 'महावीर अलंकरण' प्रदान कर सम्मानित किया।

भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह के सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं और समाज को सात्विकता एवं नैतिकता की दिशा में प्रेरित करते हैं। उन्होंने जैन समाज की सेवा परंपरा की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करते हैं।

जीवन में आचरण ही सच्चा संदेश : आयोजन समिति के अध्यक्ष स्वप्निल कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर का संदेश केवल विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे जीवन में आचरण के रूप में उतारना आवश्यक है। यह आयोजन समाज में एकता, सेवा और विश्व बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। आयोजन समिति की ओर से स्वागत भाषण महावीर ट्रस्ट मध्य प्रदेश के अध्यक्ष अमित कुमार सिंह कासलीवाल ने दिया, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से राकेश विनायका एवं श्वेतांबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से विजय मेहता ने संबोधित करते हुए इस आयोजन में जैन एकता की प्रासंगिकता को बताते आयोजन को इंदौर नगर का सौभाग्य बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप चौधरी व दिव्यादित्य कोठारी ने किया।

इस अवसर पर मंत्री तुलसी सिलावट, विधायक रमेश मेंदोला सहित अनेक जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी आयोजन समिति राजेश चेलावत अग्निबाण,विजय मेहता, पुष्पा प्रदीप कासलीवाल, मनोहर झांझरी,मनीष सुराना, विमल नाहर,डॉ. अनुपम जैन, राकेश विनायका, शिखरचंद बाफना, सुशील पांड्या, प्रदीप चौधरी सहित अनेक समाजसेवी एवं समाजजन बड़ी संख्या में शामिल हुए।

विश्व रिकॉर्ड पुस्तक दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका मुख्यमंत्री को भेंट : समाजसेवी हसमुख जैन गांधी ने मुख्यमंत्री को उनके द्वारा संपादित 'दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका' भेंट की। उन्होंने अवगत कराया कि इस पुस्तक की एक लाख प्रतियों का विश्व रिकॉर्ड 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज हुआ है। मुख्यमंत्री ने इस उपलब्धि की सराहना करते हुए श्री गांधी को प्रोत्साहित किया। समारोह ने यह संदेश दिया कि भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाकर समाज में एकता, शांति और सेवा की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक महा-महोत्सव मुंबई में धूम-धाम से मनाया गया
भक्ति का सैलाब: मुंबई स्थित चारों मंदिरों की संयुक्त श्रीजी की निकली भव्य शोभायात्रा

महानगर मुंबई दिनांक ३० मार्च २०२६ को चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भक्ति और श्रद्धा का अनूठा संगम देखने को मिला, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन देहरासर, गुलालवाडी, श्री दिगम्बर जैन सीमंधर जिनालय, जवेरी बाज़ार से श्री जी को विमान में विराजमान कर नगर भ्रमण कर श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, भुलेश्वर व श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कालवादेवी होकर महाप्रज्ञ हाल में शोभायात्रा सम्पन्न हुई। गुलालवादी पार्श्वनाथ मंदिर में विराजमान उपाध्याय श्री १०८ विरंजन सागर जी महाराज ससंघ का मंगल सानिध्य सभी को प्राप्त हुआ।

इस शोभायात्रा में चारों मंदिरों के ट्रस्टी व सभी श्रृद्धालुओं ने सम्मिलित होकर भगवान महावीर के जयकारों से महानगर को गुंजायमान कर दिया।

श्री वसंतलाल एम. दोशी का तीर्थों सेवा में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मान

इस अवसर पर तीर्थ संरक्षण के क्षेत्र अग्रणी भूमिका निभाने

वाले, भारतवर्षीय दिगम्बर तीर्थक्षेत्र कमेटी के परमसंरक्षक, कुंदकुंद कहाँन दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं अनेकों संस्थाओं के उच्चासीन पदों पर सुशोभित श्री वसंतलाल एम दोशी जी का वृहद समाज मुंबई एवम् उक्त चारों मंदिरों द्वारा सामूहिक रूप से लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पूज्य उपाध्याय श्री विरंजनसागर जी महाराज अपना आशीर्वाद देते हुए वसंतलाल एम दोशी जी के द्वारा तीर्थो के संरक्षण जिनमें श्री सम्मेदशिखर जी, श्री गिरनारजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर, श्री ऋषभदेव केशरिया आदि अनेकों तीर्थों की कानूनी लड़ाई में योगदान देने के अत्यंत सराहना की। श्री वसंतभाई एम् दोशी के इस सम्मान के सुअवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी सहित अनेकों प्रतिष्ठित संस्थाओं के पदाधिकारियों, समाज सेवियों ने उन्हें अपनी शुभकामनायें प्रेषित की।

गुजरात अंचल द्वारा आयोजित महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में मनाया गया -

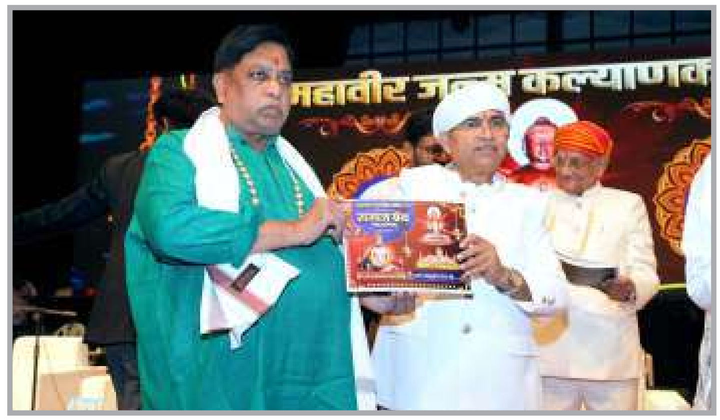

श्री महावीर जन्म कल्याणक- महोत्सव अत्यंत भव्य, प्रेरणादायक एवं ऐतिहासिक रूप में सम्पन्न हुआ। इस दिव्य आयोजन की गूंज आज पूरे भारतवर्ष में सुनाई दे रही है और जैन समाज में व्यापक उत्साह, उल्लास और धार्मिक श्रद्धा का वातावरण निर्मित हुआ है। आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, समाज के गणमान्यजनों तथा विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सक्रिय सहभागिता देखने को मिली, जिससे यह महोत्सव एक अद्वितीय एवं स्मरणीय आयोजन बन गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन गाज़ियाबाद ने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि यह महोत्सव जैन समाज की गहरी आस्था, एकता और समर्पण का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि गुजरात अंचल द्वारा की गई यह पहल वास्तव में अत्यंत सराहनीय और प्रेरणादायक है, जो आने वाले समय में देश के अन्य अंचलों, राज्यों और शहरों में भी ऐसे भव्य एवं अनुकरणीय आयोजनों के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी। उन्होंने आगे कहा कि भगवान ।महावीर का संदेश अहिंसा, सत्य, करुणा और सदाचार पर आधारित है, जो आज भी मानवता के लिए उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पूर्व था। ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन समाज को भगवान महावीर के आदर्शों से जोड़ते हैं तथा नई पीढ़ी में धर्म, संस्कार और तीर्थ भक्ति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बुप्रसाद जैन ने इस भव्य और सफल आयोजन के लिए पारसमल जी बज, ऋषभकुमार जी, राजेश जी, नरेश जी, रतन जी सहित समस्त आयोजन समिति एवं सहयोगियों को हार्दिक अभिनंदन एवं साधुवाद देते हुए कहा कि उनके अथक प्रयास, समर्पण और संगठित कार्यशैली के कारण यह महोत्सव अद्भुत, अलौकिक और स्मरणीय बन सका। उन्होंने आयोजन से जुड़े सभी स्वयंसेवकों, कार्यकर्ताओं और समाजजनों की भी सराहना की, जिनके सहयोग से कार्यक्रम अत्यंत सुव्यवस्थित और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उन्होंने कहा कि ऐसे भव्य आयोजन केवल उत्सव नहीं होते, बल्कि समाज में धार्मिक चेतना, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक एकता को मजबूत करने का माध्यम बनते हैं। यह महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और सामूहिक सहभागिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा है। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बुप्रसाद जैन ने अहमदाबाद के समस्त प्रभुभक्तों, आयोजन समिति और सहयोगी संस्थाओं को इस ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायक आयोजन के लिए हृदय से कोटि-कोटि बधाई एवं अभिनंदन प्रेषित करते हुए आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी ऐसे दिव्य एवं भव्य आयोजन समाज को नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

त्रिशला नंदन वीर की
जय श्री महावीर की

REVIVING JAINISM: THE WHY AND THE HOW

- Manish Modi

Jay Jinendra

Respected dignitaries, learned scholars, and dear friends, We gather here today not merely to celebrate the glory of Jainism, but to reflect—seriously, sincerely, and collectively-on its future.

Let me begin with a simple yet unsettling question: Can Jainism survive—and more importantly, flourish—in the rapidly changing 21st century?

This is not rhetorical. It demands an honest answer.

Jain Dharma, one of the most ancient spiritual traditions known to humanity, has long stood as a beacon of ethical living and deep introspection. Rooted in the timeless principles of ahiṃsā, satya, asteya, brahmacarya, and aparigraha, it offers not merely a philosophy, but a complete way of life.

At its core, Jainism is a path of self-realisation—to know the self, to discipline the self, and ultimately, to liberate the self.

It is inward. Rigorous. Transformative. And yet, today, we stand at a moment that calls not for celebration alone—but for introspection, and perhaps even course correction.

A COMMUNITY AT A CROSSROADS

Let us speak plainly.

Our community is undergoing visible change. Birth rates are declining. Marriages are being delayed. Migration—within India and globally—is increasing.

Assimilation into broader social frameworks is accelerating. These are not isolated trends. They are structural shifts. But beyond them lies a deeper concern: A growing distance between Jain youth and Jain thought.

This is the real challenge before us. The world our youth inhabit is vastly different from the one we knew. It is faster, more competitive, more connected—and yet, more fragmented. They are navigating careers, global mobility, financial pressure, and digital overload, all at once.

In such a world, the inward discipline of Jainism can appear distant, demanding—even impractical. But let us be clear: this is not a failure of our youth.

It is a failure of communication—on our part.

For centuries, Jainism sustained itself through inward strength and disciplined continuity. But today, inwardness without outreach leads to invisibility—and invisibility leads to irrelevance. If we do not engage meaningfully, we risk a gradual but certain decline.

THE CHANGING LANDSCAPE

To respond, we must first understand the world as it is.

We live in an age of speed, scale, and constant stimulation. Information is abundant; attention is fragmented. Young people seek clarity—but also relevance. They value depth—but only if it is accessible.They are willing to learn—but only if they can connect.

They learn in short formats. They engage through interaction. They question everything—and rightly so.

In this environment, traditional modes of teaching cannot stand alone. Long discourses, dense texts, and rigid pedagogies cannot carry the entire burden of transmission.

If Jainism is to remain relevant, it must not

dilute its principles—but it must rethink its delivery. The message is eternal. But the medium must evolve.

THE PROBLEM OF ACCESS

And nowhere is this gap more visible than in our access to language. The teachings of the Tīrthaṅkaras are among the most refined spiritual insights ever articulated. They are preserved in the Jain Āgamas and a vast body of literature. But how many young Jains today can access them directly?

Very few.

The primary barrier is language.

PRAKRIT: A FORGOTTEN TREASURE

Prakrit was once a living civilisational language -used across regions, in courts and inscriptions, and in the transmission of the Jinas' teachings.

Its influence survives in many modern Indian languages. Yet today, it has become distant, almost inaccessible.

This is not merely a linguistic gap. It is a rupture in continuity. When language is lost, nuance is lost.

When nuance is lost, understanding weakens. And when understanding weakens, practice becomes superficial.

REVIVING PRAKRIT: A SHARED RESPONSIBILITY

The revival of Prakrit is not optional. It is essential.

It is a Jain responsibility—but also a national one. We need structured academic programmes, institutional support, and clear pathways-from basic learning to advanced research. The recent recognition of Prakrit as a Classical Language presents a valuable opportunity.

But opportunity without action becomes regret.

At the same time, revival cannot remain confined to academia. It must enter daily life—and for that, we must embrace technology.

Where are our young people? On their phones. On digital platforms.

So why are we absent there?

We need simple, intuitive tools for learning Prakrit—structured, engaging, and accessible. Platforms that allow gradual progression from basic vocabulary to scriptural understanding.

These are not luxuries. They are necessities. They are the bridge between tradition and transmission.

DIGITAL INITIATIVES: A NEW BEGINNING

Encouragingly, we have begun to move in this direction.

AI-driven tools are making scriptural knowledge more accessible. Digital platforms are organising Jain literature into searchable formats.

Community systems are improving coordination. This is not dilution. It is an expansion. It shows that Jainism is not resistant to change—it is capable of intelligent adaptation.

STRENGTHENING THE COMMUNITY

Knowledge alone cannot sustain a tradition. A living dharma requires a living community. The Jain community has achieved remarkable economic success. But success must not remain individual—it must become collective.

We must invest in people. Support students and scholars what take up Jain Studies as their chosen path. Encourage entrepreneurship. Build mentorship networks.

A strong community is defined not by wealth alone, but by the opportunities it creates.

UNITY AND CULTURAL CONFIDENCE

We must also address internal divisions.

Sectarian differences have historical roots—but they must not define our future. We are too small, and the challenges too great, to remain divided.

Unity does not require uniformity. But it does require shared purpose.

At the same time, cultural expression must be strengthened. Stories, literature, films, and digital media are central to how values are transmitted.

If we do not tell our stories, others will—and not always as we would wish.

RETURNING TO THE CORE PURPOSE: MOKṢA

Amid all this—language, technology, community—we must not lose sight of the central truth:

The goal of Jainism is liberation.

Freedom from attachment. Freedom from suffering. Freedom from the cycle of birth and death. But this goal must not remain abstract. It must be lived.

The Jinas have taught us that samyagdarśana-enlightened perception, or self-realisation—is the gateway to mokṣa. It is the decisive turning point.

And yet, how many of us are truly focused on liberation?

Our attention must return to samyaktva.

This requires svādhyāya, contemplation, and dharma-dhyāna. Without these, the soul does not develop the inner readiness—yogyatā—for samyagdarśana. And without samyagdarśana, there is no liberation.

JAINISM AS A WAY OF LIVING

Let us bring this down to daily life.

What we give returns to us. This is not merely belief—it is the Universal Law.

If we want peace, we must create peace. If we want respect, we must give respect.Let us take responsibility for our inner world. Let us move beyond "Why me?" to "What can I learn?"

We are not merely bodies playing roles—we are souls on a journey. Let us consciously build puṇya and reduce pāpa. Let us give without expectation. Let us act with sincerity—disciplined within, compassionate without.

THE INNER DISCIPLINE

The four bhāvanās offer a practical framework:

Friendliness towards all, Joy in the virtues of others, Compassion for those who err, Equanimity in the face of provocation.

These are not ideals. They are practices.

When faced with negativity, we can react—or reflect. Reflection breaks the cycle. Real change comes not through force, but through understanding—and understanding begins within.

SPIRITUALITY IN THE MIDST OF LIFE

Spirituality does not require withdrawal from the world.

Jainism asks something more demanding: to live in the world, but not be consumed by it.

To engage—with awareness. To act—without attachment. The shift is simple, but profound: from changing others to changing ourselves.

THE ROLE OF ASCETICS AND HOUSEHOLDERS

We must address a growing confusion.

The Tīrthaṅkaras clearly distinguished between śramaṇas and śrāvakas—ascetics and householders.

Ascetics follow the path of the mahāvratas. This is the highest ideal, and they are the pride of our tradition.

But these vows cannot be imposed on those living in the world.

Expecting householders—especially the young—to follow extreme disciplines, such as enforced celibacy, has often had the opposite effect. It distances them from the tradition itself.

We must recognise this—honestly.

A community as small as ours cannot afford to alienate its youth.

Śrāvakas must be encouraged to live with honesty, restraint, and ethical clarity—while still pursuing education, careers, and aspirations.

If our youth feel that Jainism restricts them, they will look elsewhere—for meaning, for belonging. We must ensure they do not feel that way.

THE QUESTION OF POPULATION

We must also acknowledge declining numbers.

This is not merely demographic. It has cultural consequences. We cannot dictate personal choices. But we can create conditions that support continuity: strong families, supportive networks, and intergenerational connections.

At the same time, we must remain open to sincere seekers drawn to Jain values.

ENGAGING WITH THE WORLD

Though small in number, Jains have a voice of influence. The world today is searching for sustainability, for non-violence, for balance.

Jainism offers all three.

Through scholarship, dialogue, and public engagement, we can contribute meaningfully to global conversations.

A CALL FOR THE FUTURE

The coming years will be decisive.

If we act with clarity, unity, and conviction, Jainism will not decline—it will evolve, deepen, and expand. Not by altering its essence, but by making it accessible, understandable, and livable. Circumstances will change. But principles—rightly understood and sincerely practised—will endure.

CONCLUSION

In the final analysis, the question is not whether Jainism will survive.

The real question is: Will we live it? Will we walk the talk?

Will we move from admiration to application? From identity to transformation? From ritual to realisation?

Jainism does not depend on numbers. It depends on authenticity. Even a small number of individuals living it fully—with awareness in thought, restraint in action, and compassion in conduct—is enough.

Because dharma does not reside in texts alone. It does not reside in institutions alone. It resides in the lives of those who embody it.

Na dharmo dhārmikair vinā—there is no dharma without those who practise it.

The responsibility is not distant. It is not abstract. It is ours.

And it begins—not tomorrow, but here and now.

Jay Jinendra

गोमटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा का 1045वाँ प्रतिष्ठा दिवस दिव्य वैभव के साथ सम्पन्न हुआ

श्रवणबेलगोला, श्रीक्षेत्र के विंध्यगिरि पर्वत शिखर पर विराजमान भगवान बाहुबली स्वामी की भव्य एवं विश्वविख्यात प्रतिमा के 1045वें प्रतिष्ठा दिवस के पावन अवसर पर विशेष महापाद पूजा, अभिषेक एवं धार्मिक अनुष्ठान अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और वैभव के साथ संपन्न हुए। इस अवसर पर देशभर के विभिन्न क्षेत्रों से आए श्रद्धालुओं ने भगवान बाहुबली स्वामी के चरणों में उपस्थित होकर पूजा-अर्चना कर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

कार्यक्रम पूज्य आचार्य 108 श्री अनेकांत सागर महाराज के पावन सान्निध्य तथा परम पूज्य अभिनव चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भगवान बाहुबली स्वामी के चरणों में पंचामृत अभिषेक, महाशांतिधारा तथा 108 विशेष द्रव्यों से अर्घ्य समर्पण की भव्य पूजा विधिवत् संपन्न कराई गई।

पूजा में श्रद्धालुओं ने भगवान के चरणों में गन्ने का रस, कषाय, दही, हल्दी, अष्टगंध, रक्तचंदन, केसर, पुष्पवृष्टि, श्वेत चंदन, चावल का आटा, अष्टद्रव्य एवं नारियल जल आदि से अभिषेक पूजन कर अपनी श्रद्धा और भक्ति अर्पित की। संपूर्ण वातावरण "भगवान बाहुबली स्वामी की जय" के जयघोषों से गूंज उठा और विंध्यगिरि पर्वत आध्यात्मिक उल्लास से सराबोर हो गया।

इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में पूज्य भट्टारक स्वामीजी ने बाहुबली स्वामी की प्रतिमा के इतिहास के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि गंग साम्राज्य के पराक्रमी सेनापति चामुंडराय जी ने अपनी माता की इच्छा पूर्ण करने के लिए सन् 981 ईस्वी में भगवान बाहुबली की इस भव्य प्रतिमा का निर्माण कराया था। आज इस दिव्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा को 1045 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। यह प्रतिमा न केवल जैन धर्म की आस्था का प्रतीक है, बल्कि भारतीय कला, स्थापत्य और आध्यात्मिक परंपरा की महान धरोहर भी है।

पूर्व में प्रतिमा निर्माण में योगदान देने वाले महान व्यक्तित्वों के सम्मान में प्राचीन आचार्यों द्वारा चामुंडराय, गुल्लिकाय अज्जी, माता काललादेवी, महाशिल्पी तथा आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आदि के नाम पर सात कलशों से अभिषेक करने की परंपरा प्रारंभ प्रारंभ की गई , जो आज भी श्रद्धा और भक्ति के साथ निभाई जा रही है। इस परंपरा के माध्यम से उन महान व्यक्तित्वों के योगदान को स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक नमन किया जाता है।

कार्यक्रम में भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा एवं भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनेक पदाधिकारी एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इनमें महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जी जैन गंगवाल, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जी जैन सपरिवार, अशोक सेठी, विनोद बाकलीवाल, विनोद डोड्डन्नावर सहित अनेक प्रमुख समाजसेवी और धर्मप्रेमी श्रद्धालु शामिल थे।

श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला के दिगंबर जैन समाज, महिला समाज तथा विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इस उपलक्ष्य पर सभी श्रावकों को श्री बाहुबली स्वामी जी का महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त बेंगलुरु, हासन, शिवमोग्गा और बेलगावी सहित आसपास के अनेक नगरों से आए श्रद्धालुओं ने भी उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में भाग लेकर इस पावन अवसर को और अधिक गरिमामय बना दिया।

श्री दिगंबर जैन मठ इंस्टीट्यूशंस मैनेजिंग कमेटी ट्रस्ट - (SDJMIMC) कर्नाटक जो प्रसिद्ध जैन तीर्थ क्षेत्र श्रवणबेलगोला के प्रबंधन, बाहुबली प्रतिमा (विंध्यगिरि) की सुरक्षा, और महामस्तकाभिषेक जैसे आयोजनों को भट्टारक श्री अभिनव चारुकीर्ति महास्वामी जी के सानिध्य में संचालित करती है। गत लगभग 60 वर्षों से ट्रस्ट द्वारा मंदिर दर्शन, तीर्थयात्रियों के लिए आवास, और धार्मिक कार्यक्रमों की व्यवस्था भी की जाती है। इसी महत्वपूर्ण कड़ी में ट्रस्ट द्वारा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन तथा भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल जी का पदारोहण समारोह भी बहुत धूम धाम से किया गया।

संध्या समय श्रीमठ से भगवान बाहुबली स्वामी की स्वर्ण रथ में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा श्रवणबेलगोला की विभिन्न गलियों और मार्गों से होती हुई अत्यंत भव्यता और धार्मिक उल्लास के साथ सम्पन्न हुई। मार्ग में श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर भगवान का स्वागत किया और पूरे नगर में भक्ति एवं उत्साह का वातावरण छा गया।

परम पूज्य आचार्य 108 श्री अनेकांत सागर जी महाराज ससंघ एवं भट्टारक चारु कीर्ति स्वामी जी के सानिध्य में भारतवर्ष तीर्थ क्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष बनने के उपरांत प्रथम बार श्रवणबेलगोला बाहुबली जी आगमन पर, भव्य यात्रा एवं जुलूस निकालकर पारंपरिक तौर तरीकों से सम्मान किया गया.

इस प्रकार भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा का 1045वाँ प्रतिष्ठा दिवस श्रद्धा, भक्ति हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया, जिसने जैन समाज की आस्था, एकता और धार्मिक परंपराओं को और अधिक सुदृढ़ करने का संदेश दिया।

आचार्य श्री सुनील सागरजी से तीर्थक्षेत्र कमेटी की शतकोत्तर रजत वर्ष पर चर्चा

बड़ौदा पंचकल्याणक के दौरान भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू जम्बू प्रसाद जैन दिल्ली अंचल अध्यक्ष प्रद्युम्न जैन व चैनल महालक्ष्मी ने आचार्य श्री सुनील सागरजी से तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत वर्ष के दौरान होने वाले कार्यक्रमों पर चर्चा की।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री सुनील सागरजी ने कहा कि आज यहां तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी उपस्थित हैं, जो अपने 125वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है। गिरनार में भी कमेटी 2-3 बार मिलने आई थी। जितनी तीर्थों की सुरक्षा की आवश्यकता आज जरूरी हो गई है, शायद उतनी पहले नहीं रही होगी। आज ऐसी विकट स्थिति बन रही है जैन समाज की, जैसे तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव पर हमारी सरकारें, बड़े-बड़े नेताओं और मीडिया समुदाय को भी मालूम नहीं है कि महावीर और बुद्ध में क्या अंतर है। बुद्ध का फोटो लगाकर के महावीर जयंती की शुभकामनायें दे दीं।

जैसे गिरनार की चौथी टोंक, 5वीं टोंक पर वीतरागी मुद्रा में हजारों वर्षों से खुदी हुई है - पूर्ण शांत वीतरागी मुद्रा, एक तरह से निर्ग्रंथ परम्परा का आज नुकसान हो रहा है। तीर्थक्षेत्र कमेटी हर तीर्थ की सुरक्षा के लिये प्रयास कर रही है, पर आप सबको भी साथ जुड़ना होगा, तीर्थों पर यात्रायें करनी होगी। इसको मजबूत करोगे, तो हमारी संस्कृति मजबूत होगी। अपनी प्राचीनता की आज पहचान बनाने की आवश्यकता है। तीर्थंकर काल्पनिक नहीं हैं। नेमिनाथ को काल्पनिक मानेंगे, तो श्री कृष्ण, राम भी काल्पनिक हो जाएंगे। ये मिथक नहीं है। ऋषभ-अजितनाथ का वेदों में उल्लेख है। तीर्थक्षेत्र कमेटी तो कार्य कर रही है, आप भी जुड़ें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी ने बताया कि जब से तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना हुई है, तब से एक ही उद्देश्य है चल-अचल तीर्थों की सुरक्षा करना, संरक्षण करना, संवर्धन करना। पर यह तभी पूरा होगा, जब हम संगठित होंगे। अक्टूबर से हम 125वें वर्ष के लिये विशेष कार्यक्रम करेंगे, उसमें आप सभी आमंत्रित हैं। आज अत्याचार हो रहे हैं, हमारे तीर्थ हाथों से निकल रहे हैं, हमें यात्रायें करनी होंगी। तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक रूप से मजबूत करना होगा।

दिल्ली अंचल अध्यक्ष श्री प्रद्युम्न जैन ने कहा कि आप लोग तन से, मन से या धन से ज्यादा से ज्यादा तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग करें। हमें संकल्प करना है कि हर परिवार का हर सदस्य रोजाना कम से कम एक रुपये जरूर तीर्थों के लिये निकाले। तीर्थों के विकास में आपको सहयोग करना होगा।

चैनल महालक्ष्मी की ओर से कहा कि यह 125वां वर्ष तीर्थों की सुरक्षा-जागरूकता के लिये समर्पित रहेगा। हर व्यक्ति इस अभियान में शामिल हो। चातुर्मास स्थापना के समय तीर्थ सुरक्षा कलश की स्थापना हो और इस बार तो तीर्थक्षेत्र कमेटी, आकर्षक कलशों का निर्माण करा रही है। मंदिर / चातुर्मास समितियां समय रहते कलश तीर्थक्षेत्र कमेटी से मंगवा सकती हैं और जो राशि आये उसे तीर्थक्षेत्र कमेटी को जमा करा दें। तीर्थ सुरक्षा कलश स्थापना की सबसे पहले शुरूआत आचार्य श्री सुनील सागरजी द्वारा दिल्ली चातुर्मास के दौरान की गई थी। इस बार हर जगह चातुर्मास स्थापना में यह कलश रखा जाये - ऐसा आह्वान तीर्थक्षेत्र कमेटी करती है।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
द्वारा आयोजित
व्यावहारिक सुझाव/निबन्ध प्रतियोगिता

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में 2 प्रतियोगिताऐं आयोजित की जा रही हैं।

- **युवा वर्ग (45 वर्ष से कम) - व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता, विषयः- ''तीर्थों का विकास कैसे हो?''**
  शब्द सीमा - 1,000 शब्द
- **प्रौढ़ वर्ग (45 वर्ष से अधिक) - निबन्ध प्रतियोगिता, विषयः- 'तीर्थों के सम्मुख चुनौतियॉं एवं समाधान'**
  शब्द सीमा - 3,000 शब्द

- दोनों वर्गों के लिए पुरस्कार अलग अलग हैं।
- प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि **30.06.26** हैं।
- प्रविष्टि ए-4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोज कराकर अथवा सुवाच्य हस्तलिपि में भेजी जानी चाहिए। केवल बाहर के पृष्ठ पर नाम, पता, फोन नं. लिखें, अन्दर कहीं न लिखें।
- स्त्री - पुरूष का कोई भेद नहीं है। भारत का कोई भी नागरिक प्रविष्टि भेज सकता है।
- भाषा हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में मान्य है।
- आयु के प्रमाण स्वरूप आधार कार्ड की छाया प्रति साथ भेजें। अथवा कोई अन्य प्रमाणपत्र जिसमें जन्मतिथि अंकित हो। आयु की गणना 31 मार्च 2026 को की जायेगी।
- **पुरस्कार राशि -** दोनो वर्गो हेतु अलग-अलग

पुरस्कार राशि -	**प्रथम रु.**	:	**21,000.00**
दोनो वर्गो हेतु	**द्वितीय रु.**	:	**15,000.00**
अलग-अलग	**तृतीय रु.**	:	**11,000.00**

- **आवश्यकतानुसार सांत्वना पुरस्कार भी घोषित किये जा सकते हैं।**
- प्रविष्टि पंजीकृत डाक से भेजने का पता : -
  डॉ. अनुपम जैन,
  प्रधान सम्पादक - जैन तीर्थ वन्दना
  ज्ञानछाया, डी.14, सुदामा नगर
  इन्दौर 452009
  मोबा. 94250 53822, 95898 83822
- सभी विषयों में अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम होगा।

जम्बूप्रसाद जैन
अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
महामंत्री

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन-शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रम समिति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह के अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1 लाख रूपए की राशि प्रदान करने वाले महानुभावों को तीर्थ चक्रवर्ती पद से सुशोभित किया जा रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण| संवर्द्धन सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस उदे्श्य की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक श्रावकों धर्म प्रेमियों तथा तीर्थ रक्षकों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से मन से जुड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

इन महानुभावों के द्वारा तीर्थ रक्षा हेतु 1 लाख रूपए का प्रदत्त अनुदान के संबंध में उन्हें तीर्थरक्षक चक्रवर्ती पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। निश्चित ही प्राप्त राशि तीर्थों की रक्षा, विकास और व्यवस्थाओं लिए व्यय की जाएगी ऐसा आपको विश्वास दिलाते है।

तीर्थ चक्रवर्ती योजना कमेटी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ तो बनाएगी ही साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग को तीर्थो की रक्षा और विकास से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करेगी।

जो सज्जन अब तक निम्नलिखित 'तीर्थ चक्रवर्ती' पद सुशोभित कर चुके है उनका परिचय निम्न प्रकार से है

श्रीमान सुरेश झांझरी
कोडरमा

श्रीमान शिरीष भाऊ देवसावजी चवरे
कारंजा लाड

विदूषी डॉ. कल्पना जैन
नोएडा

श्रीमान हसमुख जैन गांधी
इंदौर

श्रीमान अमित कुमार जैन
देहरादून

श्रीमान आदिश्वर कुमार जैन
गाजियाबाद

श्रीमान देवेन्द्र जैन
मेरठ

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव

स्थान :- अंतिम केवली श्री 1008 जम्बू स्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, मथुरा चौरासी (उत्तर प्रदेश)
बुधवार-गुरुवार, 21-22 अक्टूबर 2026

जम्बूप्रसाद जैन	संतोष पेंढारी	जवाहर लाल जैन	प्रदीप जैन, PNC
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन स्थापना वर्ष समिति	चेयरमैन स्थापना वर्ष महोत्सव
9810180510	9822225911	9411245100	9837056653

उपाध्यक्ष
श्री सुरेशचन्द जैन टी.एम.यू., मुरादाबाद, 9412234730
श्री प्रदीप कुमार जैन, पी.एन.सी, आगरा, 9837056653
श्री विजय जैन, अहमदाबाद, 9825007495
श्री नीलम जैन अजमेरा, उस्मानाबाद, 9422070319
श्री संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद 9430688133

कोषाध्यक्ष
श्री अशोक जैन दोशी, मुम्बई 9820430114

मंत्री
श्री हसमुख जैन गांधी, इन्दौर 9302103513
डा. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर 9411025124
श्री वीरेश जैन सेठ, जबलपुर 9630888771
श्री जयकुमार जैन कोटा वाले, लखनऊ 9414068250

आंचलीय अध्यक्ष
श्री पारस जैन बज, अहमदाबाद गुजरात 9054518039
श्री विनोद जैन बाकलीवाल, मैसूर कर्नाटक 9900420001
श्री मिहिर बाहुबली जैन गांधी, अकलूज महाराष्ट्र 9900420001
श्री डी.के.जैन, इन्दौर, मध्यांचल 9827096093
श्री कन्हैयालाल जैन सेठी, औरंगाबाद पूर्वांचल 9431223893
श्री राजकुमार जैन कोठारी, जयपुर राजस्थान 9414048432
श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड 9411245100
श्री संजय जैन ठोलिया, पॉण्डिचेरी तमिलनाडु 9443616595
श्री प्रद्युमन आर जैन, दिल्ली, 9811221008

13 मार्च 2026

आदरणीय मान्यवर,
सादर जय जिनेन्द्र!

विषय:- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के "शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव वर्ष" के संबंध में।

आशा है आप एवं आपका समस्त परिवार सकुशल होंगे। अत्यंत हर्ष के साथ निवेदन है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का **"शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव"** दिनांक 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक आयोजित किया जा रहा है। इसी संदर्भ में एक चिंतन बैठक का आयोजन दिनांक 10 मई 2026 को अयोध्या तीर्थक्षेत्र में किया जा रहा है।

यह महोत्सव तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्वर्णिम एवं गौरवशाली 125 वर्ष के इतिहास, उसकी उपलब्धियों तथा भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श का एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस चिंतन बैठक में आपकी गरिमामयी उपस्थिति, अनुभव, सुझाव एवं मार्गदर्शन **"शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव"** को सार्थक, भावशाली एवं प्रेरणादायी बनाने में दिशा प्रदान करेंगे। हमें इस अवसर पर यह भी विचार करना है कि अपनी 125 वर्ष की समृद्ध विरासत को आगामी पीढ़ी को किस प्रकार से हस्तांतरित किया जाए।

इस पावन अवसर पर देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ, श्री अजितनाथ, श्री अभिनन्दननाथ, श्री सुमतिनाथ एवं श्री अनन्तनाथ भगवान की जन्मभूमि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही परम पूज्य गणिनी प्रमुख 105 आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी ससंघ के आशीर्वाद तथा नवनिर्मित राम मंदिर के दर्शन का भी सुअवसर प्राप्त होगा।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया इस बैठक में पधारकर अपनी उपस्थिति द्वारा आयोजन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें। कृपया अपने आगमन की सूचना दिनांक 30 अप्रैल 2026 तक निम्नांकित संपर्क सूत्रों पर प्रदान करने का कष्ट करें, जिससे आपके आवास एवं अन्य व्यवस्थाओं की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र :- श्री जीवन प्रकाश जैन राष्ट्रीय मंत्री 9411025124
श्रीमती मीनू जैन 7078548210, श्री पीयूष जैन 7217756871

सादर निवेदक।

(जम्बू प्रसाद जैन)	(संतोष जैन पेंढारी)	(जवाहर लाल जैन)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन

प्रधान कार्यालय : द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तूरबा गांधी चौक, सी.पी. टैंक मुम्बई - 400004 मो.: 9833671770, 9109228683 | Mail : tirthvandana4@gmail.com
कार्यालय : PNC INFRASTRUCTURE LIMITED, PNC HOUSE DELHI ROAD, AGRA MOB: 963909555, 7217756871 | Mail : pkjain@pncinfratech.com

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi April 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.